

DPN 6405

Title : योग वसिष्ठ- / YOGA VĀSISṬHASĀRA
सार

Run. No. 7096

Cat. No.

Micro. No.

Subject Yoga's āstra

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. / 2-

Size in cms. 25 x 16

Folios 43 Lines (in a page) 25

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS 1985

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thiyasaphu / Nepali bound

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

ईती श्रीयोगवसिष्ठसारे भाष्ययां ज्ञानतत्त्वनिरूपनं प्रकरणं दसमोऽध्याय ॥१०॥
सम्बत १८८५ साल कार्तिक कृष्ण षष्ठि - सनीवारया दीनस केया सिध याडा जुलो -

योग वशिष्ठ



श्री
माहु
श्रीपतीलाल कोकिलापुरहा

७/५/६

श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ श्रीभगवते वासुदेवा
 य नमः ॥ ॥ प्रणामेति ॥ कोहि एक समयमावा
 मदेवमयि जो दनु सो श्रीमहोदेवका चरणा मा प्र
 णाम गरि जिवन्मूर्ति दिव्या उपाय मता ई आ ग्या
 वसुभनी विनिगर्दा भया ॥ १ ॥ परं ज्ञानेति ॥
 श्रीमहोदेवपनि आशिका वचन मुनि आग्या गद्धन
 हे मुने परमतत्त्व ज्ञान मक ई दु मुन जो ना ज्ञान हुना
 ते तत्त्व प्रकाश हुन तत्त्व प्रकाश हुना ते गरि संपूर्ण
 आसारूपी पाप तत्त्व वचन सह जे दु न त ॥ २ ॥
 आधा गदिनि ॥ ॥ कोन भन्या आधा गदि य द व क
 मापनि शुभ मुगल दि भया काना डि मा पनी प्रणव
 आदि भया क शरीर मापनि परम अदु न त्वर ई देन
 ॥ ३ ॥ न च यो रिति ॥ तोहि ज्ञान पादि ला ग्या का को
 हिना ध्यान गद्धन भुन्या का दनु को हिना दु भने
 र दु ख पाई दनु ए समा पनी तार क पदार्थ ज्ञान कन
 ला ग्दे ननु ॥ ४ ॥ मीमीमेति ॥ मिमी सा न्या ये गनी
 ता शिवा न्न वेद वेदा न्न धर्म शास्त्र कर्म का ग ॥ ६ ॥ दशा
 स्वव्या क रणा क विना अर्वाकार शास्त्र रूप दना ते
 गरी कन तत्त्व पदार्थ मिदे न परं नु न त्व विना सगु
 रु विना मिदे न ॥ ५ ॥ कायायेति ॥ गेरु वा तो ई
 क पाति तो ये र के श ड ये तना ते पनी अने क तर
 का पाय गड बटा ई ने पनी उ न्न न बो ता हा जा हि पि
 नी ते पनी ना गे पि नी ते पनी का न्या का क परा भार
 नाग नी ते पाने वेद आदि धर्म शास्त्र प च ना त प

निरुवितामापनिपुणं यथा तापनी सभाकाविच
 माबोलनजायां यथा तपनी ईसबपेनभनीकावि
 मितअभ्यासगमाको हो आत्मा जानाकाविमिनहो
 ईनभनीवामदेवमाविफनभीमहदेवआग्याग
 दन॥ ६ ॥ **रक्षामिति॥** रक्षाभयोऽश्वाटनभ
 योप्रपंचनेयुक्तभयाकोभयशस्त्रसंपुर्णपदार्थ
 कोअभ्यासनेगरीविचित्रभोगमासन्मुखदुनुताअ
 ज्ञानेहोभूआदिहोआनमाभयोनाईहुरुआविवे
 क्षमाद्वचनमाआत्मापाईदभानेचिन्तनेध्यानग
 र्जुभयोरातिगन्तव्यपाईदभनुताभ्रममात्रहो
 कीनभयाइसबमेलेवनायाकोहोइनमाकोईहो
 नभानेईनीनाईहोईअमभेरहन॥ ७ ॥ **आ**
नेति॥ अरुजगत्ससारमाभयाकाशास्त्रअनेकहो
 तापनीमोशास्त्रनेगरीलक्षकोटियुगमापनिनव
 पाईन्योदेन॥ ८ ॥ **अथाहामिति॥** आहोदेवीई
 प्राज्ञगणादिफनजिन्मापनुयेकनमोक्षकाविमि
 तपरमनत्वज्ञानमफईहुसुननिफलकप्रपंचने
 रहितभयाकोजोहोसोपरमनत्वफहीहो॥ ९ ॥
यस्यादिति॥ जस्येयिन्योसंपूर्णईत्यत्रईहुजस्यो
 रक्षाकोहोपाईजाहयोसबैतयहुन्याहईहोम
 रमश्रेष्ठनत्वफहीहो॥ १० ॥ **आवाभावेति॥** आ
 वअभावभन्याहुवैवेबहारनभयाभयाकोकेहेवि
 नासईत्यतिनभयाकोसंपूर्णसंकल्पभेदापर
 ह्याकोईसेताईपरमनत्वफहीहो॥ ११ ॥ **अना**
कारेति॥ अकारपनिनभयाकोसंपूर्णमापुरिर

ह्याकोपत्रदानपत्रिन्यानचलन्यास्थिररक्षाकोसं
 पूर्णईपायेतेरहितभयाकोसंपूर्णकामनाभेदा
 पररक्षाकोरहेदभानेजानु॥ १२ ॥ **प्रथमेति॥**
 प्रथमपृथ्वीतत्त्वफहीहोदोशोजतनत्वहनेशाने
 जनत्वफहीहोचतुर्थवायुतत्वहोभनीजानु॥ १३

॥ **आकाशेति॥** पाचोतत्वताआकाशतत्वहोहो
 थोतत्वमनफहीहोसातोपरमनत्वजोजानुहोसोमा
 क्षहोहो॥ १४ ॥ **परामिति॥** हेवामदेवमभिपर
 मतत्वातेमिताईहोह्यात्पोतत्वजानातेगरीजन्म
 मरगारूपेवन्दकोविनाशगन्ताहोतेसेकोअभ्यास
 तिमिताईफेरीपनिफहीहोहोअभ्यासगन्तावि
 तिकेनत्वमातयेमाहोईजानुहोशोकहीहो॥ १५ ॥
विवेकमिति॥ एकातस्थलगयेरबरोबरभयाकोआस
 नगरीभूखपूर्वकवासिचारोतर्फविचारगरिहानप्र
 मानदृष्टिगविसारैरस्थिरगरीसंपूर्णविययेचि
 नाहोईअमनुजोतानरहनेईहोशतरहनेअभ्या
 सगर्जु॥ १६ ॥ **शुभाशनेति॥** शुभासनमावसि
 तत्वअभ्यासगन्ताजोगिहोसोसातोतत्वमाओपैप्रा
 प्रहोहोसदासर्वदाअभ्यासगन्तापरमनत्वप्रकास
 होईजाहो॥ १७ ॥ **ब्रह्मारेति॥** कस्तोअभ्यास
 गर्जुभन्याब्रह्मगऽपनीपंचभूतपनीपंचभूतमये
 रहेदपरनुसर्वपदार्थतापंचभूतमयेरहेदभनि
 निश्रयेगरीजानेरहेदभन्याजोहोशोभावनागरी
 जानु॥ १८ ॥ **गीतामापनिकह्याकोहो** सर्वभू
 तानिभूतानिचात्मानं सर्वभुतानिचात्मानिईक्षते

योगयुक्तत्वा सर्वत्र समदर्शनेति ॥ १६ ॥ तत्रैव
चिदिति ॥ संपूर्णचित्तादिरहितभयाकोशो गी
जोद शो मनमाह हि ध्यान दुदेन तवने से लाई भि
त्रकारि रभ्यावेव हार कोडित नूका सन्मुख होई
जाय ॥ १७ ॥ तत्रैव ॥ नवननदेवी सन्मुख
रभयो नवअमन दुदे जाय ॥ जाहा जाहा अमन
दुदे जाय ताहा ताहा चितविलय दुदे जाय ॥

॥ मनेति ॥ उपान्त मनपवन भयावेव हार
नाश होई जाय मनपवन भया हारया पक्षी स
र्वेई द्योये का विषये नाश होई द्योये को विषय
नाश भया पक्षी वा हाराने सलाई दुदेन ॥ १८ ॥

॥ वाच्यज्ञानकोना सभया प्राज्ञत्वा संपूर्णसम
होई जाय जाहा सम्प्रभयो भया जगन्ने पार
होई जाय ॥ १९ ॥ परमेश्वर
मावो भया को जो जो जो द शो लय मायो होई
र सदा अभ्यासे मार होई जो न परमेश्वर भया
को लये अवस्था प्राप्त होई ॥ २० ॥ तत्रैव ॥
आविष्को मुक्तचित्तभया को निमीलाई होई दुदुख
सिती भपनी दुदेन ने सो न मर्षा कोयो होई भनौता
न विचार गरी हे होई द्योये को चे स्ता ज स्ता को तसे
दे विद अन्न कर गा भासिन न भैर होई ॥ २१ ॥

नवेति ॥ जिडोद भनौ भया होई अन्न कर गा भा
भासि देन मया की भनौ भया आवा निमित्ताप
निदेव द न जिडो हो न मया को द ज स्ता अन्न

कर गान स्को नूक्त कर होई ॥ २२ ॥ निजिवे
नि ॥ निर्वान नूतन माग व्या को वा नि जो द शो ज
स्तार हो ले निश्वत भेशो आ पाई द न स्ते जग
नूको व्या पार ले ही न भया लये अवस्था मा आ
पे प्राप्त होई ॥ २३ ॥ यथेति ॥ जगत्का व्या पा
र देवी मुक्त भया को योगी जो द शो लय अवस्था
मा पुग्य ज स्ते निश्वत भया को वा नि निर्मल भैव
त्य द सो भाय मान दे विद युक्त ॥ २४ ॥ सदा
देति ॥ शब्द आदि भया का विषये नूक्त भया पक्षी
लये अवस्था देव द ज स्ते पानी मानुन कुमै सी
ग पाने मे विताई द न स्ते लय मा ली न होई ॥

॥ चिंतनेति ॥ जाहा जाहा चिंता विलाया न व
ताहा ताहा पवण पनी लये दुदे जाय जव पवन
को लय भयो भया अभा समार हा को योगी को
मल पनी परब्रह्म मय होई जी द ॥ २५ ॥ तत्र
नेति ॥ ज स्ते नून जल का संग ले गरी जल मये
होई जी द त स्ते मन पनी ब्रह्म दुभया आवलेन
स्ते मन पनी ब्रह्म मय होई जाय ॥ २६ ॥ पथेति
॥ ज स्ते नून पानी भया पक्षी नून दे विद न पानी
कर होई मन पनी ब्रह्म का सर्व धर गरी आपे
निर्वाण ब्रह्म होई जी द ॥ २७ ॥ धृतेति ॥ ज
स्ते दुध दे वि नि का विया को घि ड पेरी मीला
या भि न दे वि दे न त स्ते ब्रह्म देवी नि क त्या का
मन आप नून तव पाया को योगी श्री न पदार्थ

देवै ननु ॥ ११ ॥ **निमेवति** ॥ निमेवश्वास
 पला घरी प्रहर दिन मेहा सम्बन्ध सरई काल
 नेगरी तये माजोरहन सधद हस्वयेर प्रहमा
 जाई जात ॥ १४ ॥ **स्वासेति** ॥ धनिमेवकोर
 कस्वा सई ह हस्वा सको सुध पाताई हन स्तेसा
 ठि पाताकोर क घडी ह हस्तेनर हते दिन मे
 हावर्थ ह ह भया काल गति प्रमाण कहि हसन
 ॥ १५ ॥ **योगिनि** ॥ योगि जो ह सोर क निमेव
 मात्र तये मा काल गुमाई हन सोना सातो न त्वता
 ई हुन पाई हन स्मान्ते सैका अभ्यासमा चेतवा
 रकार गमनु भद ॥ १६ ॥ **धमति** ॥ एस्ता अ
 भ्यासमा बार बार जोर ह ताते भाई गमि पनि हो
 ला धोने मा सीति पनि होला बार बार निद्रा पनि
 होला दान्त बाधी मूर्च्छा पनी होला धनिमेव तये
 मा जो योगी रहता एस्ता चरित्र ईत्यन्त होला ॥
 १७ ॥ **स्वासेति** ॥ एध स्वास तये भया प्राण भा
 दि भया कवायु ह रुसवे सुषुम्णा का सवधने
 गरी आक्रा २ ठाई पाई व ह गाता ननु ॥ १८ ॥
 दुई स्वास तये हुना ते गरी कन कुम आदि भया
 कवायु ह रुफिई हन धानु ह रु पनि वंदन स
 कद हन ॥ १९ ॥ **वासु स्वासेति** ॥ चार स्वासमा
 तय भया पक्षी सात धानु मा र ह्वा क र सवध रो व
 र गरी संपूर्ण धानु क र पुष्टि गर्न सक्त ॥ २० ॥
 ॥ **तयेनेति** ॥ एध पाता मात्र तये भया प

दि आसन देवी उठ ता देवि वे न स्वा स ई हा स पानि
 हेनु विस्तनु पानि थोरे भया को ई ह ॥ ४० ॥
पतदयेति ॥ दुई पाता तये मा र ह्वा ह दये नाई
 चत्त लाई अन ह द शव सुनिनु ता ह ते सैमा च
 तताई नु ॥ ४१ ॥ **पतपतेति** ॥ चार पता प्रमा
 राने गरी तये अवस्था को जा अनुभव गहन सता
 ई अकस्मात अन्न करण देवी शव को शुभा शुभ
 जान्याई ह ॥ ४२ ॥ **पतेति** ॥ आठ पता तये हु
 न सक्ता ते सको संपूर्ण काम नानी वृत्ति ई ह अति सु
 दरो कामिनी ते अनुग गरी आति गन गण आय
 पानि काम जी देन ॥ ४३ ॥ **कता पादेति** ॥ पध
 पता तये हु कामा सुषुम्णा नाई जो हन सो आपे वा
 यो ते गरी व हन ता हन स्सम यई धो का वाताले ग
 री पाई न्या भोग मान स्को ई ह जा देन ॥ ४४ ॥
धानि कायेति ॥ आधा घडी तये हुना ते पानि शक्ति
 कुंडालि वत्त लाई उठ त ह किन जाग्द ह मनोलात
 मन पवन को दोह गति निरोध हुना ते आपे जाग्द
 ह ॥ ४५ ॥ **कतामात्रेति** ॥ दुई घाई को एध
 कता क हाई ह एध कता तये हुना ते पानि शक्ति
 चत्त त हुना ते गरी क्षरो माई त्या द भयो भनि म
 न पानि पमान हुन आ ॥ ४६ ॥ **चतुष्प**
तेति ॥ चार पता तये मा र हन सकि या प्रात नि
 द्रा ह र ई दो जी ह ते स्ता ते ते जको विरु फिल
 गा ज स्ता दे मनु ताग्द ॥ ४७ ॥ **दिनमादेति** ॥

दिनमासकपाडलयहुनसकाआहारथोरैहुँदै
 जादुदिशानघुसकादुवैथोरैहुँदैसरिरपनि
 हुँदैबिन्तोभैरहुँदै॥ ४८ ॥ **वासरादेति॥**
 आधादिनलयहुनालेपनीआत्माजोदिप्रका
 शहुँदैजसैसूर्यकाकिरणनेगरीसँसारक
 राप्रकाशगहनसैयोगीपनीविश्वयसैर
 हँदैभनिप्रकाशमानभैरहुँदै॥ ४९ ॥
दिनमात्रेति॥ एकदिनमात्रलयहुनालेपनी
 आत्मनत्वप्रकाशहुँदै॥ त्योतत्वप्रकाशहुनाले
 सँपूर्णइन्द्रोयेकोविस्तारबुद्धाराआपुहुँदै॥
॥अहोरात्रेति॥ एकअहोरात्रलय
 हुनालेपनिआफनाआसनमावस्थाकोयोगी
 जोहसोचितवृत्तीनिरुधभयाकोईडोडुरडुर
 सँप्रसमाचारजादु॥ ५१ ॥ **अहोरात्रद्वय
 ति॥** दुईअहोरात्रलयरुपीआनन्दलेमूढापा
 ईदोयोगीजोहसोसँकल्पनभयाकोहुनालेटा
 देदेविरसकोस्पर्शजादुपरअस॥ ५२ ॥
परअहोरात्रत्रयेति॥ तिनअहोरात्रलेयेमाआ
 नन्दभयाकोयोगीजोहसँकल्पविभक्त्यनभ
 याकोहुनालेदुरैदेवीरस्तोहोयस्तोभयोभनि
 आसनमावासिखनरहुँदै॥ ५३ ॥ **अहोरात्र
 चतुष्टयेति॥** चारअहोरात्रलेयाप्रभावले
 गरीटादेदेवीइन्द्रोयेकोस्पर्शज्ञानत्योगी
 लाइभयोभैनुन्नाचिजदसददेन॥ ५४ ॥

५
पंचरात्रेति॥ पाचरात्रलेयेमारहनलेपनिह
 टभयाकोहदोटाटाकोवाटभैनुनानुन्नानेका
 बिचमाहुँनालेसवैकामनमाआश्रययाप्रादुह
 न॥ ५५ ॥ **एकामिनो॥** एस्तानरहलेपाचे
 ईन्द्रियकाज्ञानमहानत्वकोकारणभयाकोजान
 योजोगीविषईन्द्रियकोशेरुभयाकोहुनालेसँ
 पूर्णविश्वसँसारकोवाटवस्थाकोठडिजादुह
 न॥ ५६ ॥ **षट्परात्रेति॥** छरात्रसमलेयेनि
 नमारहनसकापहावृद्धिकोईदयहुँदैजाहास
 म्मतर्कनागर्हताहासम्प्रतिविजानहुँदै
 पुगुह॥ ५७ ॥ **सप्तपरात्रेति॥** सातरात्रलय
 मारहुनुसक्योत्योगीअर्क्षतनमाभितनसक
 यहुँदैसोआदिबुद्धापर्व्यतइश्वरनत्वज्ञानहुँ
 छवेदवेदान्तकोअर्थज्ञानहुँदै॥ ५८ ॥ **अष्ट
 ति॥** अष्टरात्रलेयेतिनमारहन्याजोगीजोहसो
 निगमयहोईजादुनस्कनभोगियासाआदिभ
 याकाभावलेवाधागर्नपनीसक्यैननु॥ ५९ ॥
नवपरात्रेति॥ नवरत्रसम्प्रलेयेमारहन्याभेदा
 भेदकोदिसत्यमामात्रवर्तमानगन्थाताइबच
 नासिद्धिपनिसहजैहुँदै॥ ६० ॥ **दशपरात्रेति॥**
 दशरात्रलयमारहनजानालेगरीत्योगीआत्मा
 आविदिनुहुनालेगरीगुप्तराधाकोपदार्थजोह
 सोचित्रविचित्रबाहिर्बोसिदेह॥ ६१ ॥
तत्तत्त्वेति॥ एघाररात्रलयमारहनसक

न्याकनतावेगकोईदमेईदत्योवेगईदयेवे
 गहुनालेगरीकनतामनसंगकनरुगगग
 नईदगईद॥ ६१ ॥ **द्वादशहोति॥** वाईदि
 नतयहुनालेगरीकनभूचरिभन्याकोसि
 दिईदसकनिमेषकोकोलमासंपूर्णपु
 थ्योपिरिआईनुसमर्थईद॥ ६२ ॥ **तने**
ति॥ ताहादेवीईप्राप्ततेहुदिनसम्पलये
 नेअहुनभयाभाजोगीजोहस्वयेचरिभ
 न्याकोसिदिहनपाईद॥ ६३ ॥ **चतुर्दश**
ति॥ चोथदिनसम्पलयेमारहनसकन्याक
 गताजागोमादिभन्याभाअष्टसिदिपाई
 द॥ ६४ ॥ **आत्ममजेति॥** आत्मेमाआत्मा
 तिनभेसोहुदिनसम्पहनसकन्याजोगी
 लाईमहिमानामभयाकोसिदिआईदज
 ओभन्योनोहुनसकद॥ ६५ ॥ **अष्टाद**
शोति॥ अथादिनसम्पलयेमाजोगीरई
 दतस्वनगरिमानामभयाकोसिदिहन
 पाईदजोईनासिदिपाईनालेपृथ्वीकोभार
 पृथ्वीजोहुनशकद॥ ६६ ॥ **अभिनाथति॥**
 लयेदेवीवितिकअकोअथकनप्रजोजनन
 भेसदारहमाजोगीजोहशोनश्राईलाघिमा
 नामभयाकोसिदिआईदजोनालाघिमोपा
 ईनालेगरीसानुभेदापनिवहुनसानुहुन
 सकद॥ ६७ ॥ **द्वाविंशति॥** वाईसादि

नपर्थेनतयेकोतक्षणाप्रजोतयेहुनस
 कदसोजोगीकनप्राप्तामभयाकोसिदि
 मिददजोनसिदिपाईनालेगरीजगत्कोस्थ
 तिपालनगर्नसकदद॥ ६८ ॥ **परोति॥** पर
 मतत्वमानयेचोविसिदिनजोगीगीरहेतान
 स्वनप्रकासम्पनामभयाकोसिदिमिदद
 जोनसिदिपाईनालेगरीजोइहागईसोपा
 ईद॥ ६९ ॥ **यस्येति॥** जस्योचिन्तदविस
 दिनसम्पलयेमाअस्तभयाकोहतश्राईजग
 दिक्षेत्यपदविमिददसंपूर्णजगत्कोगुरु
 हुनसकदद॥ ७० ॥ **अष्टविंशति॥** अठाई
 सदिनसम्पलयेआसनमास्थीतभेतयेमाजो
 रईदतश्राईवासिनोनामभयाकोसिदिहन
 मिददजोनसिदिमितनालेजगत्बस्यग
 नसकदद॥ ७१ ॥ **गनुमिदति॥** जोनजो
 गीतयेमारहेरसकचित्तगरीपरब्रह्ममाजा
 नईदवारवारगईतस्वनईनासिदिसवभा
 ईविघ्नगईद॥ ७२ ॥ **समेकेति॥** सक
 महिनाअखंडीतभेतयेमारयोभन्यान्योजोगीयाव
 तमोक्षभन्यापदविमापुष्टद॥ ७३ ॥
नवमासेति॥ नोमहिनासम्पलयेमारहनसक्यो
 भन्यापृथ्वीतत्त्वसिदिईदपृथ्वीतत्त्वभयो
 न्यान्योयोगीलाईवज्रलेदेदनसकदेनयवे
 ईद॥ ७४ ॥ **साईति॥** अठाइमेरुसम्प

लयमा र ह्या जो जो गी ह सो न भाई जल न त्व
 को सी दि हुँ ह्यो सी दि हुँ ना ले गरि न ले मय हु
 न सक द ह ॥ १५ ॥ **सम्बन्ध सरीति** ॥ तिन
 वर्य सम्बन्धे मा जो जो गी र ह ह्यो न त्व ले ने
 जे मये हु न सक द ह ॥ १६ ॥ **बटा मिरिती** ॥
 ह वर्य सम्बन्ध अखण्ड भै र ह न जो स क्ता न त्व
 न वा यु न त्व का सि दि पाई ता वा यु न त्व को सि
 दि पाई ना ले वा यु मय हु न सक द ह ॥ १७ ॥
तथेति ॥ न ले वा ह वर्य सम्बन्ध अखण्ड निरन्त
 र भै लये मा जो र ह ता न भाई अ का स न त्व
 को सि दि हुँ ह्यो सी दि पाई ना ले गरि आ का
 स न त्व मये हु न सक द ह ॥ १८ ॥ **चतुर्विंश**
ति ॥ चो वि स वर्य सम्बन्ध निरन्त र ले ये मा जो र ह
 न सक द ह न भाई शक्ति न त्व को सि दि हुँ
 ह्यो सी दि हुँ ना ले गरि शक्ति न त्व मये होई
 जा न ॥ १९ ॥ **व्याख्यान** ॥ आ फु सरी र मा व
 ह्या गड स वर्य ह व ह्या गड ता ई ह के ला मा मो
 दि ग वी हे न्या जा हि ग र्ण पाने सक न ह ॥ २० ॥
व्याख्यान ॥ स पुरा लो क न आ फे सरी र मा
 दे न्या पा दि कि न न त्व च वी ग र्ण नो ला न ह म
 ने शक्ति न त्व को क्षे य ग र्ण नि मि न न त्व च वी ग
 र्ण ह ॥ २१ ॥ **इति मिति** ॥ ए स्ता न र ह
 ले क म व द ई दे न ये मा र ह्या जो गी जो ह सो
 पर मान न ह को भोग पाई दो ह दो क ज हि भ

न्या नु भू रिण्ड का ग आ दि भ या का म हा त्मा जा हि
 आ न न ग र्ण ॥ २२ ॥ **व्याख्यान** ॥ नि क्त्वा मा
 हा त्मा भ नो ला न व ह्या वि श्व म हे श्वर आ दि भ
 या का अ म्म र दे व ता ह रु को प्र ल य हु दा मा पा ने
 जो गी ह रु पर म आ न न भै र ह ह न क ज हि भ
 न्या ड ने भु शू रिण्ड का ग आ दि भ या का म हा त्मा ज
 हि भै र ह ता ॥ २३ ॥ **इति अम्भन स्वे अम्भ**
ल भा या लये यथ म ॥ वा म दे व न्या य ले प रि
 वि त्ति ग र्ण हे भ ग वा न नि मि जो ह्यो सो स व का
 ई श्वर भ या का पर म आ न न भ या का नि मि अ
 को को हि आ धि नि मि ले सु च ना ग म्मा को को हि
 आ शा ह व स भ नि वि त्ति ग र्ण भ या श्री म हा दे व
 ले के रि क ह न ना म्मा ॥ २४ ॥ **वाहि मुंडाति** ॥
 वा हि र का मु द्या ले गरि यु क्त भ या को जो गी जो
 ह सो न न य होई जा न अ न्त क र ण का मु द्या
 ले यु क्त भ या को यो गी अ न्त क र ण का मु द्या ले
 यु क्त भ या को यो गी अ न्त क र ण म ये होई जा न
 भ नि जा न ॥ २५ ॥ **राज जोगीति** ॥ हे मु ने राज
 जो ग भ या को ए हि हो स पुरा मु नी ह रु ले शे क
 क हाई ना ले सो राज जो ग भ नि क हाई ह ॥
 २६ ॥ **राज नामा मिति** ॥ हे दि प्य मान मान
 भ या का पर व ह्य क न प्रा ण ह रु ले ज न्य ग
 री चो डे पा प्र ह भ नि राज जो ग भ ह ॥
 २७ ॥ **राज जोग स्थिति** ॥ ए सै का र ण रा
 ज जो ग आ न्य न त्व को जा द ह ता ने सि द्ध ग

रई मुनि हुँ हनस्मान्ग रुके मुखदे खिल
 येहुँ ॥ १८ ॥ **अन्तयोगानि** ॥ अन्तकरण
 को योग मुनि र बाहिर को योग मुनि जो विशेष
 यहुँ बैजो दह सो मैलो तो मैले पाने दो कदिना
 को जोग्य हामि हुँ को बैदे यो देह नया अ
 रुको बदेह भना को भासै ध्ये ॥ १९ ॥
विशामिति ॥ अन्तर योग भया को कस्तो हो
 भनोला तेह मुने विन बुद्धि आई कार ई तो न
 करारि विज मुने ही तबनायार पाच ई दे
 य दश प्राण का चरु वनायेर आत्मा ज्योतिर्म
 डलमा जो हो मगली सो हि अन्तर जोग कहाई
 ॥ २० ॥ **तन्मुनेति** ॥ तजोतिर्म डलका
 हाह भनोला तेह मुने तजो गी का मुला देखि म
 सिखासै मज्योतिर्म डल रह ह ह डल जोतिर्म ड
 ल करण जोगी ह रुच्या न गह न किन ध्या न ई न
 भनोला त अनिमोदि सिद्धि करण सह जै मि
 लाने ध्यान गह न ॥ २१ ॥ **वेदानि** ॥ वेदशा
 स्त्रना नानर ह का पुगण ह रुता सामान्य वेसा
 जाति जी न किन भनोला त रुके साभविम

६
 आदि मुद्रा न बश कुल की बहारी मै सवेशा
 समाग प्रभया की दर मुद ब दो क हाई ॥
 २२ ॥ **अन्तमिति** ॥ तजो मुद्रा कस्तो ह भनोला
 त अने करण मा लक्षणा न दृष्टि भया की ह
 बाहिर का आका का भासा भया की ह हे गुचिम
 लुने सने रहित ह स सेनाई सी भवि मुद्रा भनि
 जी न सहि मुद्रा सर्व शास्त्र माग प्रर ध्या की ह
 ॥ २३ ॥ **शक्तिति** ॥ यो मुद्रा कस्तो ह भनोला
 ह भनोला तेह मुने आदि शक्ति पार्वति हुनाले
 पाहिले यो मुद्रा कन पाई दिभई न अहिले पूर्व
 जन्म का सी स्मरण ले गरी कन निमित्तै ध्यानि मी ह
 रुहुई वाहि कदेयी ने श्वा ई पाया को ह न ॥
 २४ ॥ **गुह्यादिनि** ॥ गुह्य भेदा पानि अनि गुह्य
 भया को यो विद्या जो ह लोक से साई न दिनु यो
 ज्ञान भया को योगी जो न दे श मार ह ला सो दे श प
 नी पुन्य को भा जो भनी क ह्या को ह ॥ २५ ॥
देशनेति ॥ तजो ज्ञान भया का पुरुष कन दृष्टि न
 पशे न गणी ले गरी ह का ह सकुल सम्प्रदा अ
 ज्ञानि पानि मुक्त पद पाई ला ते ही ज्ञान मा लाम्या
 को न महात्मै का हा सम्प्रदाई ॥ २६ ॥ **नोचानि** ॥
 यो ज्ञान कस्तो गरी जानु भनोला तेह मुने ड भोई
 को कण्डालि भे दर ई मुनि आदि भया को मुद्रा
 ह रु पाने का ही देन पर न आत्मा को अ नुसंधान
 मान योग मुनि ले गरी कन पानि सिद्धि दायक
 हुँ ॥ २७ ॥ **उद्दिनि** ॥ तजो साभ विचेतन्या
 शये मुद्रा कस्तो ह भनोला तेह काम देव उभो म

खट्टदृष्टि ईधो भयाका दृष्टा फु ईधो गमि दृष्ट
 अनिमिर ईधे दृष्टो पृथ्वी यत्र जसो ई दृष्ट
 गति ईधो भुवो आपे मा विधान जो जान दृष्ट
 सो जीव मुक्ति कहा ई दृष्ट ॥ ६८ ॥ **गीता मापनि**
 ईधे मृत बंध साधाने ॥ ॥ कुलाचार ॥
 ॥ ई मुने कुलाचार मस्तो हो भनी दीग फु सातेन
 गाईया इगुरुन वहुने मध्याका दृष्ट कुलाच
 न्याको काहा धियो त को हो मुकाहा देखि आइ मु
 काहा जाया दृष्ट मुने निमो मुचलेया ईने जाया
 गुरुन दुई जस ईता पनि दृष्ट ॥ ६९ ॥ **पथे**
नि ॥ जस्ते फुल देखि फुल को प्रकास भै फुल
 को नाश ई दृष्ट ते सैयो देह मा भयाको नत्व म
 देह पानित ये भई न स ई दृष्ट ॥ ७० ॥ **फुलरी**
नि ॥ फुल को प्रकाश गर्वा निमित फुल फुल
 को हो भनि जातु फुल न का प्रा न फुल आपे ना
 स ई दृष्ट प्रथ्या ते दृष्ट ते सैयो देह पानित त्व प्र
 कास निमित भयाको हो यो पर मशो दृष्ट हो
 ना नत्व पाई दृष्ट न त्व पाया पक्षी म मेरो रई दृ
 ष्ट ॥ ७१ ॥ **तत्वमिति ॥** त्वस्तो मर मृत त्व
 दार्थ आपे मार हा को न जानि कन मुख ह रु
 शास्त्र मा मोह कन पाई दृष्ट न कसु जहि भया गु
 कार ग मार जो दृष्टो का थ मार हा को बोक्का क
 दुर्विदि भैया को दृष्टो बोक्का कुला मार ई दृष्ट भनी ह
 मी जस्तो साखी ह रुजा नु ॥ ७२ ॥ **नमो सुत**
नि ॥ सह जान दृष्ट भयाका गुरु कन मेरो न मस्का
 र दृष्ट जस्का नाका रूपी अमृत लेगरी सी सार
 रूपी विवर रंग दृष्ट दृष्टो भया जस्ते मंत्र न

मायाको विषय जाये न तस्ते सीसार रूपी माहृद
 ॥ १०३ ॥ अमृतानि ॥ आत्मे अमृत
 का प्रकाश गयी निरीजन पापाहीन भयाकोर
 स्ती अमनस्य विद्या आनन्द कला भयाकी कद
 हि भनी न समी सवे भदाई को भैरव्या की दृष्ट ॥
 १०४ ॥ पुराणानि ॥ जो न अमनस्य ना मूढता भ
 याको जो जी दृष्ट सो फ स्तो र ईष्ट भनी तान स्वा सो
 द्या सयनी ना संभयाको सीसारी विषय को पती आग
 हना संभयाको सी पूरा चेष्टा ले रहित भयाको के
 हि वाट को आरंभ न भयाको तो स्ता जो गी वन आ
 नन्द मार ह्या आई दृष्ट ॥ १०५ ॥ ईश्वरानि ॥ समू
 र्ण सीक ल्य ईष्टि न भयाको सी पूरा चेष्टा ले रहित
 भयाको जाया ले मात्र जानि न्या स स्तो को हि लये ना
 प्रभयाको जगत् सीसार को वचन भोग चर विषय
 न भयाको ईष्ट भनि जातु ॥ १०६ ॥ बदन्ते वेति ॥
 सहित ये को लक्षण लाई को हि बुद्धि मान शा नि
 हरु त पर ब्रह्म भयाको न्ये हो हो भै दृष्ट ने हि वा
 ट को बोध अनुभव गरी कह्यो हरु ता शा स्त्र दृ
 ष्टि ले अमनस्य को आव बला ईष्ट नु ईष्ट भान मा शी
 व्या दी क रण ईष्ट पदेश पनि गर्दछ नु ता पनि आफु
 अनुभव गर्ने नि सक्तै ननु ॥ १०७ ॥ विद्यायेति ॥
 नानातर का योग शा स्त्र अने ग गुरु हरु भाम भजा
 नी यो स्वाध्याय बोध नाम भयाको गुरु कामुख देवी
 जी न्या विनि केन लक्षण मा पनि नि होई जा दृष्ट ॥
 १०८ ॥ सीक ल्येति ॥ सीक ल्य समग रि स
 या सद्यो डि नि सीक ल्य भयाको अनायास कन
 जान्या ले सधै भजन गर्नु ॥ १०९ ॥
 दुर्याति ॥ क स्तो अनायास भया दुदर्या नि

मायाको विषय जाये न तस्ते सीसार रूपी माहृद
 ॥ १०३ ॥ अमृतानि ॥ आत्मे अमृत
 का प्रकाश गयी निरीजन पापाहीन भयाकोर
 स्ती अमनस्य विद्या आनन्द कला भयाकी कद
 हि भनी न समी सवे भदाई को भैरव्या की दृष्ट ॥
 १०४ ॥ पुराणानि ॥ जो न अमनस्य ना मूढता भ
 याको जो जी दृष्ट सो फ स्तो र ईष्ट भनी तान स्वा सो
 द्या सयनी ना संभयाको सीसारी विषय को पती आग
 हना संभयाको सी पूरा चेष्टा ले रहित भयाको के
 हि वाट को आरंभ न भयाको तो स्ता जो गी वन आ
 नन्द मार ह्या आई दृष्ट ॥ १०५ ॥ ईश्वरानि ॥ समू
 र्ण सीक ल्य ईष्टि न भयाको सी पूरा चेष्टा ले रहित
 भयाको जाया ले मात्र जानि न्या स स्तो को हि लये ना
 प्रभयाको जगत् सीसार को वचन भोग चर विषय
 न भयाको ईष्ट भनि जातु ॥ १०६ ॥ बदन्ते वेति ॥
 सहित ये को लक्षण लाई को हि बुद्धि मान शा नि
 हरु त पर ब्रह्म भयाको न्ये हो हो भै दृष्ट ने हि वा
 ट को बोध अनुभव गरी कह्यो हरु ता शा स्त्र दृ
 ष्टि ले अमनस्य को आव बला ईष्ट नु ईष्ट भान मा शी
 व्या दी क रण ईष्ट पदेश पनि गर्दछ नु ता पनि आफु
 अनुभव गर्ने नि सक्तै ननु ॥ १०७ ॥ विद्यायेति ॥
 नानातर का योग शा स्त्र अने ग गुरु हरु भाम भजा
 नी यो स्वाध्याय बोध नाम भयाको गुरु कामुख देवी
 जी न्या विनि केन लक्षण मा पनि नि होई जा दृष्ट ॥
 १०८ ॥ सीक ल्येति ॥ सीक ल्य समग रि स
 या सद्यो डि नि सीक ल्य भयाको अनायास कन
 जान्या ले सधै भजन गर्नु ॥ १०९ ॥
 दुर्याति ॥ क स्तो अनायास भया दुदर्या नि

मायाको विषय जाये न तस्ते सीसार रूपी माहृष्ट
 तायेन ॥ १०३ ॥ अमृतते ॥ आत्मे अमृत
 को प्रकाश गयी निरीजन पापाहीन भयाकोर
 स्ती अमनस्य विद्या आनन्द कला भयाकी कट
 हि भनी न समी सवे भदाई को भैरव्या की दृष्ट ॥
 १०४ ॥ पुरायेति ॥ जो न अमनस्य ना मूढता भ
 याको जो जी दृष्ट सो फ स्तो र ईष्ट भनी तान स्वा सो
 द्या सयनी ना संभयाको सीसारी विषय को पती आग
 हना संभयाको सी पूर्ण चेष्टा ले रहित भयाको के
 हि वाट को आरंभ न भयाको त्याग जो जी वन आ
 नन्द मार ह्या आई दृष्ट ॥ १०५ ॥ ईक्षोनाति ॥ समू
 र्ण सीक ल्य ईक्षिन्न भयाको सी पूर्ण चेष्टा ले रहित
 भयाको जाया ले मात्र जानि न्यास स्तोको हिल येना
 प्रभयाको जगत् सीसार को वचन भोगो चर विषय
 न भयाको ईष्ट भनि जानु ॥ १०६ ॥ बदतेवेति ॥
 सहित येको लक्षण लाई को हि बुद्धि मान शा नि
 हरुत परब्रह्म भयाको न्ये हो हो भै दृष्ट ने हि वा
 ट को बोध अनुभव गरी कह्यो हरुता शास्त्र दृ
 ष्टि ले अमनस्य को आव बला ईष्ट नु ईष्ट भान मा श्री
 ध्या दी करण उपदेश पनि गर्दे दृष्ट नु ता पनि आफु
 अनुभव गर्ने नि सक्तै ननु ॥ १०७ ॥ विशायेति ॥
 नानातर का योग शास्त्र अने ग गुरु हरु भाम भजा
 नी यो स्वाध्याय बोध नाम भयाको गुरु कामुख देवी
 जी न्या विनि केन लक्षण मा प्रणिनि होई जा दृष्ट ॥
 १०८ ॥ सीक ल्येति ॥ सीक ल्य समग रिस भ्या
 या सद्यो डि नि सीक ल्य भयाको अनायास कन
 जान्या ले सधै भजन गर्नु ॥ १०९ ॥
 दुरधाति ॥ कस्तो अनायास भया दुदरयानि

मायाको विषय जाये न तस्ते सीसार रूपी माहृष्ट
 तायेन ॥ १०३ ॥ अमृतते ॥ आत्मे अमृत
 को प्रकाश गयी निरीजन पापाहीन भयाकोर
 स्ती अमनस्य विद्या आनन्द कला भयाकी कट
 हि भनी न समी सवे भदाई को भैरव्या की दृष्ट ॥
 १०४ ॥ पुरायेति ॥ जो न अमनस्य ना मूढता भ
 याको जो जी दृष्ट सो फ स्तो र ईष्ट भनी तान स्वा सो
 द्या सयनी ना संभयाको सीसारी विषय को पती आग
 हना संभयाको सी पूर्ण चेष्टा ले रहित भयाको के
 हि वाट को आरंभ न भयाको त्याग जो जी वन आ
 नन्द मार ह्या आई दृष्ट ॥ १०५ ॥ ईक्षोनाति ॥ समू
 र्ण सीक ल्य ईक्षिन्न भयाको सी पूर्ण चेष्टा ले रहित
 भयाको जाया ले मात्र जानि न्यास स्तोको हिल येना
 प्रभयाको जगत् सीसार को वचन भोगो चर विषय
 न भयाको ईष्ट भनि जानु ॥ १०६ ॥ बदतेवेति ॥
 सहित येको लक्षण लाई को हि बुद्धि मान शा नि
 हरुत परब्रह्म भयाको न्ये हो हो भै दृष्ट ने हि वा
 ट को बोध अनुभव गरी कह्यो हरुता शास्त्र दृ
 ष्टि ले अमनस्य को आव बला ईष्ट नु ईष्ट भान मा श्री
 ध्या दी करण उपदेश पनि गर्दे दृष्ट नु ता पनि आफु
 अनुभव गर्ने नि सक्तै ननु ॥ १०७ ॥ विशायेति ॥
 नानातर का योग शास्त्र अने ग गुरु हरु भाम भजा
 नी यो स्वाध्याय बोध नाम भयाको गुरु कामुख देवी
 जी न्या विनि केन लक्षण मा प्रणिनि होई जा दृष्ट ॥
 १०८ ॥ सीक ल्येति ॥ सीक ल्य समग रिस भ्या
 या सद्यो डि नि सीक ल्य भयाको अनायास कन
 जान्या ले सधै भजन गर्नु ॥ १०९ ॥
 दुरधाति ॥ कस्तो अनायास भया दुदरयानि

निजहिमिनाकासकेअंगजहिमिन्नाकास
 केकामगनीअयाकामनरबायुदुबेजोदसो
 ताजवमनबायुमाप्रवृतिहुँदतसैवायुप
 निमनमाप्रवृतिभेरहुँद॥ ११० ॥ तत्रेवति
 ॥ तिदुबेमासककोनासअयापदीअकोको
 पतिनाशहुँदसककोप्रवृतिभयोअन्या
 अकोपनीप्रवृतिहुँदतिदुबेताईवठया
 ईदीयपनीवधददतिदुबेकोधुस्तभेयेक
 अयोअन्यामोक्षकोसिद्धिहुँद॥ १११ ॥
 अत्रापि॥ तिदुबेमापनिवायुकोनासताद
 अंगअयाकायागकोअभ्यासलेपनिवायुको
 नाससाध्यदगुरुकाप्रसादबिनामनकोम
 नसाध्येतारुकरिमेवलेपनीसुसाध्यद
 अनीजीनु॥ ११२ ॥ तवात्मनेति॥ तसेका
 रणाताहाअमकोअभ्यासगर्नरपहिले
 मनकोनासगर्नजोनमनकोवासहुँदमा
 बायुकातासहोईजानुदमनकोअभ्यास
 गर्नरपहिलेमनकोवासगर्नजोनमनकोको
 नासअयापदीनुदिईदीमेदेहादिनाश
 हुनुजोहोअहेतबुद्धोहोनेनिअयापदीअ
 दतअयोअनिजानु॥ ११३ ॥ जित्वातेति॥
 दुखकासुखअयाकोअनेकतरहकाडपाय
 वडाकवृत्तेआय्हासरीरमारयाकासैपु

गीमाडीकनयललेगरीप्रचारगरयेर
 अशहालेसहितअयाकोआयाप्रवेसग
 र्नासाधनागर्नरुगानलेयुक्तदतपादिप
 रकायावेशनयदिअन्यातिनकनतत्व
 कोसिद्धिकेतेहुँदेन॥ ११४ ॥ केचिदिनि॥
 कोहितअमोरमनलीआप्रमलमुत्रपान
 गर्नरुकोहितानिनिधोनिगदीकफरा
 लानिधालदनुकोहीताआदम्बरमजेवा
 धिप्रतिष्ठाजोतददनुकोहितानुवति
 तरुणीसितकामकीजगरीविदुकरा
 ईभोचैचदनुकोहितानुवायादरुको
 हितानिपुणसरीरकानसासोदिअर्धा
 कोपनिसहुँदसककोप्रवृतिअयोअन्या
 अकोपनिप्रवृतीहुँदनीदुबेताईवठया
 ईदीयपनीवधददतीदुबेकोधस्तभे
 सकअयोअन्यामोक्षपदकोसिद्धिहुँद
 ॥ ११५ ॥ केचिदिनि॥ कोहीतामर्क्या
 मशास्त्रकोबितर्कअन्याकोबितदावाद
 लेकर्कशअन्याकोकठोरअयाकोबुद्धो
 लेयुक्तअयाकादनुहामोनत्वमीदछाअ
 न्याअईकारलेवस्याकादरुकोहीताना
 तरकासोनिजटाधारिअयाकाध्यानले

होलाभनी ध्यानमा आकुलव्याकुल भयाभाध
 र प्राय बहुधा मनुष्याकार हरता मुखवृद्धि
 भयाद्वन्ताना नातर का विचार ले युक्त भयाभा
 देखिन्छन् परन्तु निर्वीकार भयाको जो स ह
 जान नद पात्र भयाको स कपानि मृधो मा हे
 ननु ॥ ११६ ॥

एकदण्डति ॥ कोहिना एकदण्डधारण
 गर्छन् कोहिना मनपवनकाया को निगृहण
 न्योत्रिर्दोष हाडिछन् कोहितबडा जराधा
 रि संपूर्ण विभुतिधारण गर्दछन् कोहिना
 कपातीति दिगम्बर भेदिदछ कोहिना ग
 रुवाताई जान भदछन् ॥ ११७ ॥ **उन्मोचति ॥**
 कोहिना बहुलाजस्ता भयाभाध न कोहित न
 बायाई होला भनी न बान्या कोहिना मपान
 गर्नो पाषण्डवृत्ति भयाभाई त्यादिची ह
 तियाको ना नातर ह को दर्शन भयाभा देखि
 छन् परन्तु ई न मा को हि हु दे न ॥ ११८ ॥
उन्मोचति ॥ स्वात्मा मा बोधाईत्यत्र भयाभा
 देखिन्छन् परन्तु योगी न सकोई दा आत्म

बोधको अभ्यास भयाभा को नै दर्शन कनति
 ना को ई दान भयाभा जो न अवस्था आयोई सो
 मा सीतुष्ट भयाभा हुन्छ ॥ ११९ ॥ **सदासिद्धि ॥**
 सदासर्वदा नेत्र को सदागुता तस्तेना नातर
 ह का सिद्ध पचादि आसन हरूप नी तस्ते अ
 न कुरण का मन्त्रु वापनि जोगी ह रु को ड प
 योग कानि मि न हु दे न ॥ १२० ॥ **अहंकार**
नि ॥ अहंकार ले युक्त भेना नातर ह का शास्त्र
 जाद हो भनिरह न्या सये गृधले पनि ड प दे
 स बोध गर्नु न जान्या गृधले गरि क हाई छ गृ
 ध को मल का हाई प दे स को मत का हाई प दे से
 सादृष्ट भनि जाँ नु ॥ १२१ ॥ **संकल्पोति ॥**
 संकल्प मूल भयाभा ध्याना दि शास्त्र दुता ले
 चित्ते ले भयाको धर व डा डुख ले पनि आफु
 ले ई दान गरि याका स्थान तामि न्दे न जाँ दे न
 न ॥ १२२ ॥ **वेदान्तेति ॥** वेदान्ते ले न्याय शा
 स्त्र अगम शास्त्र ले अने कतर ह का विधान
 जाया सास्त्र ले अने कतर ह का ध्याना दि ले
 अने कतर ह का धर्म भाभा ले पनि चित्तो को
 प्राणो भयाको आत्मा जान ता सन गुरु देखि
 वेति रिक्त अरु ले भनि पुग्दे न ॥ १२३ ॥
तस्यादिनि ॥ तस्या न्हे जाया हो भनी ना
 हाई काई आता गर्छन् ते सै धारण निश्चये
 ले गरि संपूर्ण मनपवन का येन गरि क

25

20

15

10

5

लाभसंधानलेरहीतभयाकोअध्यात्मिक
 ध्यानयोगलेगरिपहिलेमनकोविनास
 गर्नुपद्विवायुआपेनासहुँदतिहुँवेकोना
 सभयामद्विमोक्षहुँदजवतिहुँदोमोक्ष
 भयोभयानहजनिर्मलभयाकोबिभार
 नभयाकोईक्षालेरहीतभयाकोरुस्कोका
 हिपदार्थकननायाभानिमित्तपहिलेअ
 मनेकोजोत्वगर्नु॥ ११४ ॥ **अभ्यस्तमि**
ति॥देरेकाललाग्याव्याधिबोकारणभया
 कोअतिकठिनलेमुक्तभयाकोरुस्कोप्राणा
 यामकोरुहरगर्नलेगरिदुखकोखानीभ
 याकोवडादुखलेजितिनहुनुभयाकोरु
 स्तोवायुजित्मातेव्याहुँदतसेकारणभेद
 नृत्योअमर्ददयेभयोभयानसेक्षणमा
 आनिबलवानवायुनामहोईजाहतेहि
 शान्तदयेभानिमित्तबारबाररुद्धेसहज
 स्वभावलेनिर्मलभयाकागुरुक्रमेणगर्ह
 न॥ ११५ ॥ **गुरुरिति॥**तस्मान्ब्रह्माविष्णुम
 हेश्वरपनिगुरुकहाईदुपेरीगुरुदेखिदो
 ओदेवताबलोकेहीदेनतसेकारणगुरुको
 पुजागर्नुगुरुकोसेवागर्नुगुरुदेखिवेनि
 रिक्तअरुकोहिदेननु॥ ११६ ॥
ॐ नमगुरुचरणारविन्दभ्योनमः॥६

छिरितेजस्कोनानिमेयविनानेनस्थीरभैर
 हँदजस्कोनिरोधादिकर्मनगरिकनवायुस्थी
 ररहँदजस्कोनाआत्मवपदार्थनभैकनम
 नस्थीरभयाकोहसोहीयोगीसोहीगुरुस्व
 हिसेवागर्नुजोग्यह॥ ११७ ॥ **अमनस्वेति॥**
 अमनपदार्थवटिसिख्यमाजोजरागराय
 रआफुपनिईद्वेयदेखिभयाकोजोसुखह
 न्तनुभोनिवारणगरिजोरहँदनुसोयुगा
 मगर्नुकाजोग्यभयाकागुरुहुनुअरुगुरुता
 सिख्यधान्याहुनुभनिजानु॥ ११८ ॥
गुरुरिति॥ईनेगुरुतेदेखायाभानत्वलेग
 रिफनसिख्यपनिनसेक्षणमातन्वमयेहो
 ईजाहृतत्वयेभयाकोईदोआत्माकनदेख
 विनिकेमुक्तहोईजाहृतस्मासीदेहदेन॥
 ११९ ॥ **यथेति॥**जसोसिद्धभयाकोरसको
 पसेहुनालेगरीताबोसुवर्गहोईजाहृतसे
 गुरुकाईपदेशभुनुविनीकेसिख्यपनिन
 त्वहोईजाहृत॥ १२० ॥ **तस्मादिति॥**तसे
 कारणतहावढीयानरलेगुरुकोउपासना
 ताहासहजेतत्वपाईदत्तोतत्वपाईकनय
 निवृत्तिप्रयाशनगरीबारबारतत्वाभ्यास
 मानिरीनरहनु॥ १२१ ॥ **विवेनेति॥**
 कहाअभ्यासगर्नुभयामानिसनभयाका

सकान्तस्थलजाईयावित्रभयाकाजगावि
चारगरिआनेसुंदरभयाकाडाईमावरो
वरभयाकोआसनावेक्षाईयादिथोरेअ
नादिआशयपनिगखनुस्थीरईछ॥

१३२ ॥ भुषेति ॥ सुखपूर्वकसर्वांगग
खनुआत्मपनिस्थीरगरीगखनुनिश्चल
भैरहिस्वहानप्रमाणनेत्रकोसंचारग
खीतत्वकोसमुखभैअभ्यासगनु॥

१३३ ॥ सिधोति ॥ स्वगरिभ
न्यानखदेविसेयासम्पसर्वांगसिधेन
गरईवाहिरकोपनिअभ्यनरात्रेजकोचि
नावेष्टासवदोडिडकासिनभैरहनु॥ १३४

॥ यदाभवेति ॥ जबईकासनभैयो
भयातवआपेनत्वप्रकाशईछआपेप्र
कासभयाकोनत्वलेगरीआनन्दभैआत्मा
तसेवखनमाहोईजाछ॥ १३५ ॥

आनेदेति ॥ तस्तेस्वात्मानन्दमासनु
याकोसाधुजोहृस्वसदासर्वदानन्यथा
समारईछसदासर्वदाअभ्यासमास्थिर
भयोभयापदीनक्षाईविधिपनिचाहि
देनन्योअभ्यासकोकर्मपनिचाहीदेन॥

१३६ ॥ नक्षीवेति ॥ तस्तेभयाका
कोजोगीजोहृस्वोचिनारहितभैईकासी
नक्षीविनानभैरहनालेगरीआपेप्र

रमतत्वकोप्रकाशईछ॥ १३७ ॥ स्वायमि
ति ॥ स्वयत्तत्त्वप्रकासभयापदीनक्षीरो
मानत्वयईछत्योतत्वकस्तोदभनोतान
हमुनेतत्वभयाकोयेहोहोभैगुरुपनि
सकनेनगुतिमिहामीभ्यासकोला॥ १३८

॥ काईसमेनेति ॥ मनबचनसरिरको
द्योभहुनुतावडायत्नलेगरिहोदनुदिखा
जाहिचित्रकारजहिस्थिरभैधारणागु
॥ १३९ ॥ यावादेति ॥ जाहासम्पकेहि
जन्तकोकेसरईछनाहासम्पसीकृत्यअ
ईभयावासनारथोभयासत्वकोप्राप्ति
केहृहृमादेन॥ १४० ॥ ओदासिचति ॥

ओदासिनरुपिअमृतपीपीबद्याको
योगीजोहृस्वोचिनारहितभैमनकोज
रोडबेलीछरतवसैसाररुपीरुखसह
जेदन्द॥ १४१ ॥ सदातेति ॥ सैसार

वृक्षधन्याप्राप्तकस्तोईछभनोतानस
दासर्वदाजागतअवस्थामापनीस्वप्ना
वस्थाजहीमान्दधपरंनुस्वासईकास
रहितथोरेभयाकोईछनेस्ताईनिश्च
यमुभभयाकोहृभनिजानु॥ १४२ ॥
स्वप्नेति ॥ स्वप्नारजागतनभयाकोक

सो होना भनोला त पृथ्वी मा र ह्या का वा ब न
 प्राणि हर जो द सो नि दु वे जो द न नि दार जो
 ग्रन ले यु भ भ या धा योगी हर ता जा ग्या धा
 पनो दु दे न न नि द्रा जा ग्रन अवस्थानि दु वे
 दु दे न न भ नी जानु ॥ १४३ ॥ **स्वप्नेति** ॥ दु वे
 अवस्थान भ या को न अवस्था को दु द्ध भ
 नोला त स्वप्ना अवस्थामा चित्त का हार ह
 द्ध र भु या ज स्तो दु द्ध दु द्ध जा ग्रन अवस्था
 माना ना तर का वि ब य ले यु भ र ह द्ध नि स्व
 प्रा अवस्था मार जा ग्रन अवस्था भेदा प
 र र ह्या का हु ना ले त त्व भ नि जा ग्या बुद्धि मा
 न ह रु भ द्ध न ॥ १४४ ॥ **भावभावेति** ॥
 भावर अभाव देखी अनिते त भ या को स्वप्ना
 जा ग्रन देखि पर र ह्या को म नु जि ई नु देखि
 मु भ भ या को हो त त्व जा ग्या बुद्धि मा न भ
 द्ध न ॥ १४५ ॥ **निद्रेति** ॥ ते प नि मे ले रा
 मो गरि त त्व को स्वरु प भु रि न भ नोला त
 नि द्रा को अा दि मा जा ग्रन अवस्था का अ
 न्ये मा ज स्तो ज स्तो प्र द्ध नि दु द्ध स्व भाव ना
 क न जा ग्या योगी जो द स्व मु भ भ नि जानु
 दु वे अवस्था को संध्या जा ग्रन अवस्था
 मार ह्या को वि ब य वा स ना दु द्ध को नि
 द्रा अवस्था को अज्ञान प्राप्ति न भ या को

जो अवस्था हो सो हि त त्व हो भ नि जानु ॥
 १४६ ॥ **यथेति** ॥ ज स्ते सु त्पे र ड ध्या म दी
 म नु व्य ता ई वि ब ये प्राप्ति दु द्ध त स्ते योगी
 प नि जो ग ग्या ग नि द्रा मा य आ को योग नि
 द्रा का ना श समय मा ड न भ न वि ब य ज्ञान
 हो ई जा द्ध ॥ १४७ ॥ **सर्वेनेति** ॥ स पू र्ण
 ज गा मा व स्या को ज्ञान दृष्टि जो द सो हो
 ह लो स का नि र दु द्ध र पे री पर मान त्व दे
 सु भ नि क न हे दो द्ध दो आत्म ले आत्मे को द
 श न ग दे द्ध न ॥ १४८ ॥ **प्रथमेति** ॥ प हु त
 त्व ज्ञान मा प्र वृ त्त भ या को दृष्टि जो द सो जा
 हा ता हो कै ला ई र ह द्ध के हि धा ल मा ता ना हि
 स्थि र हो ई जा द्ध स्थि र भ या को द्ध दो हो
 ह लो स हि सा न हो ई जा द्ध ॥ १४९ ॥
प्रसथति ॥ बला न धार ले गरि स क्त त्व पर
 पर को न हर त स्को न स ग नी नि मि त वार
 वार सा धा न चि त्त ग द्ध पुर म त त्व मा अ
 लं ब न ग द्ध अज्ञान दृष्टि जो द सो हो हो
 जो आ पे सा न हो ई जा द्ध ॥ १५० ॥
यथापथेति ॥ ज स्तो ज स्तो ज नि ज नि स
 दा स र्व दा अभ्या स ग द्ध न नि न नि त स्ते न
 स्ते म न को स्थि र दु दे ना द्ध पे री त स्ते वा
 यु को प नि स री र ब च न दृष्टि को प नि त स्ते

न स्तोस्थिरता दुदे जा ॥ १५१ ॥ इत्यमि
 ति ॥ दोषिणा पदार्थं न जौ न लेगि सत्त्वात्माधि
 यदुद्धभुव्यभुवाध्वनिपनिभुदे रईधुभुध्या
 योजपनि सुदे रईधुबोल बाटपनी नोदे रई
 धध्यानग न्यापदार्थपनि हृदय माध्यानगदे
 रईधुभुवा पदार्थपदुद्ध अद्वैतपदको मनन
 तत्व पाया धासनु योगी हृदयवस्था यमे र
 ह्याकोई ॥ १५२ ॥ यदेति ॥ यदा जौ न समय
 मायन जा हा यथा जौ न प्रका रले यस्मानु जसदे
 सिनु मन स्थीर हुनु न दोन से समये मानवत
 हिन थान स्तेन स्मानु न से देवी न मन ना ईचल
 न न सिनु ॥ १५३ ॥ यत्रयेनेति ॥ जा हा जा हा
 यो मन जा नु ना हा ना हा जौ ने दिनु न दे नु दिनु
 न न्या न दे न्या को मन जौ दे सो आ फे क्षे य हो ई
 जा नु दे क्षी या को मन बट दे च ना ई जा नु ॥ १५४
 ॥ येथानि ॥ कि न भ न्या ज स्ते अ क स न भ
 या को हा नि जौ दे सो न सु बा का अ पु न्या पा दि आ
 पै पि दे द न स्ते न क्षो वि या को मन आ फे वि ल
 य हो ई जा नु ॥ १५५ ॥ नि धी र्येति ॥ कि न भ
 नो लान व श ज न ले ग रि दे क्षी या को मन जौ
 दे सो धा म ग र्ज न स नै न प र नु वा यु को व स मा
 ज व प म्यो न व क्षे रो मा फे रि ड ठ द द ॥ १५६ ॥
 दुर्विचारमिति ॥ जा हा स म्प न त्व जौ दे न ना हा
 स म्प म न नि वा र ग ग र्ज स वि दे न ज व ना प

रमत त्वजा न्यो न व न्यो न त्व ता ड का ठ ज स्तो पा
 र ग म्यो ई ॥ १५७ ॥ तथा नु लेति ॥ ज स्ते स
 नार को ना ता जु को जि थो चै च ल भ या को जु
 नि स्तो स्थि र ग द न स्ते न त्व को अ भ्या स रू पो
 नु नि ले ज व भु र्गु द न व म न वृ ग ते प नी आ
 त्मा मा स्थि र हो ई जा नु ॥ १५८ ॥ नि व्य नेति ॥
 ज व म न आ त्मा मा स्थि र भ यो भ न्या न व सै पू
 र्ण म न को भा व भु यो न त्व को ड त्व न ई ध पे
 रि अ न क र ग को सै पू र्ण व य व स्था र स्तो र ह
 ध भ नि जा नि द ज व जौ नि यो न से क्षा ग मा आ
 न नु ले नि चै क्षा भ या को द को हा न पा ड अ क ई
 दो ये सै पू र्ण स्थि ति ले ये हो ई जा नु सै सार
 व्यं व हा र ले र हिन भ या को ई ध ज व न्यो द श
 भ यो भ न्या न व स रि र मार द्या को सै पू र्ण
 वा यु ले ये हो ई जा नु त्वा स र वी ज न भ या को
 का ष्ट म स्तो ई ध पे रि नि र्वा रा स्थ न मार द्या
 को दि या ज स्व भ या को ई दो स ह जा न नु स्व रु
 प मार द्या को र ह ध भ नि जा नु ॥ १५९ ॥
 नि क्षे प्तेति ॥ अ ग ग मा हा त्वा को सून सै पू र्ण म
 य द नि नि र्म ल भै र ई ध पे रि वा यु न ता म्या
 हा ड मार द्या को पा नि क स्तो धो पे त्वा को भ या
 पा नि सो द नि र्म ल हो ई जा नु न स्ते यो ड भ न्या व्य
 व हा र म न दो श पा प क्षी म न न भ या को न त्व सो
 भा वे ले ग रि नि र्म ल भ या को ड त्व न भ या प क्षी

मनमनिनि ३ वत भयाको मन होई जाऊ ॥ १५०
मनयेवोति ॥ मनुष्य हरु को वीध मोक्ष को
 कारण भयाको नाम ने हो कि न भया विषयमा
 असक्त भया भया आपे वीध दुई विषय को
 प्रोभया आपे मन मुक्त दुई ॥ १५१ ॥
मनरिति ॥ यो देवि या को जो दस पूरा चरा
 चर मन को कारण हो भनि जानु कि न भया
 जव तो मन आपे उ मनि भाव भयो भया तब
 आपे अद्वैत भाव को कल्पना गर्दछ ॥ १५२
 ॥ जाये मानेति ॥ जाहा अमन भे उ दासे भेर ह्या
 को दन भया उ स्फोसरि र को मतपनि दुई यो
 सरी र मरो हो भया आभिमान पनि दुई न आ
 पे जाऊ ॥ १५३ ॥ **अमनस्येति ॥** अमन की
 सो मा भयो भया को म को धा दि वी द न जो द मो
 ना स होई जाऊ सरि र पनि मुक्त को होई जाऊ
 ज स्ते धर को मूल बावो निर्वली यो भयो भया
 धर पनि धन दन स्ते को म न रूपी देई को धा
 वा निर्वली यो भया को सरी र पनि जगत् प्रा
 य होई जाऊ ॥ १५४ ॥ **सहजेनेति ॥** सह
 जे उ त न भया को जो अमन न भे मन को वि
 ना रूपी को रो नि भया प दी ज स्ते उ ठ न भ
 या को दाना सुम र्चि द न स्ते सरी र पनी मन
 सुवान भया को म न दु नाले आपे सुम वी र
 ईछ ॥ १५५ ॥ **अमनस्येति ॥** अमन रु

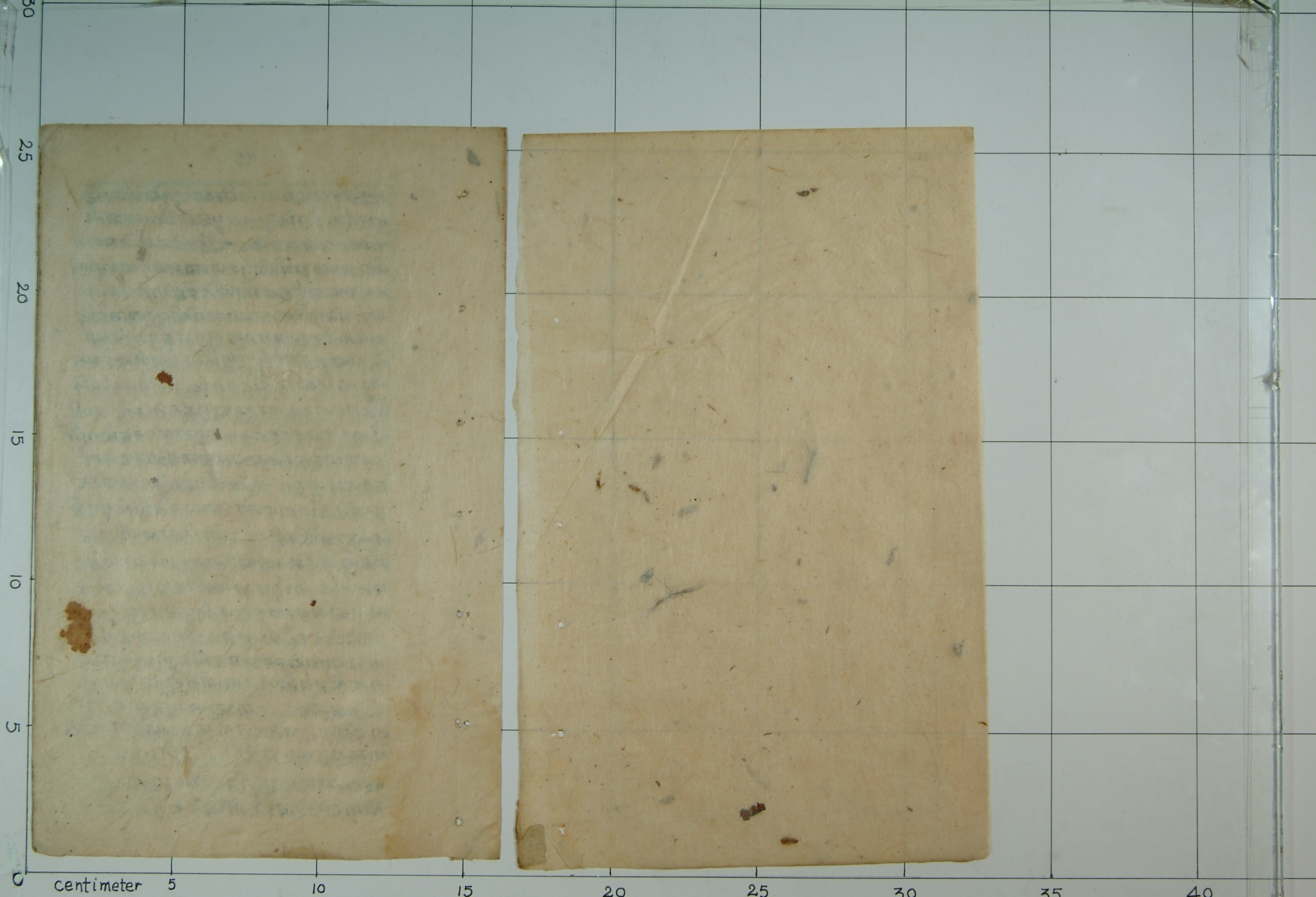
पो वै भानि ले गरी अ न क र रा का ज नि भाना
 का ना रो द न ये उ दा ज रा को द ड प नी न रा वी क
 न स मु न आ का न्या प्रा न यो मु नी सु वी दुई ॥
 १५६ ॥ **कदातिदेति ॥** क स्तो भया के रा को बो ट
 जा स्त भया का दुई फल दी या प दी ना श होई
 जा छ त स्ते यो पुरुष लाई प नी अमन रूपी प
 ल दि या आपे मन प नी ना स न ये होई जाऊ
 ॥ १५७ ॥ **ईदोयेति ॥** ईदो य रूपी अने क पा
 उ भ या को स्वा स द ड दा स दुई प ये ता भया को
 र स्तो मन रूपी प दी सु टा य ये टा ना स ग र्जर अ
 म न प दी जो द सो ह न न चल न न भया को दान
 स्थी र भे र के ठाई मा स नो ध भे र ईछ ॥ १५८
 ॥ **स्वासेति ॥** स्वा स रूपी सु न भा मा ले जे न्या
 का ईदो य रूपी जाल को धर भया को र स्तो मन
 रूपी जाल क न फारे र न्यो पुरुष जो द सो जाल
 ना ट उ क्क्या का मा दा ज स्तो भया भे र ईछ ॥ १५९
 ॥ **प्रशानेति ॥** बुद्धि ईदो य नि दु वे ले मुक्त म
 या का म दाने प्या दा थ का ई व ता स मा स पार भ
 या को मन रूपी श मु क्त न व ता न फार ले को ट न
 स क न्या पुरुष मु वी र ईछ ॥ १६० ॥ **गुणत्रये**
ति ॥ नि न गुण भानि ने पया ले जु क्त भया को अ
 नि व ती यो आत्म क न वी च रा ग न्या डो रि क न
 अमन रूपी दु रा का चार ले का टे र मो क्ष आपे
 दुई ॥ १६१ ॥ **पयेति ॥** ज स्ते स पूरा पृथो
 मा पे लाई र ह्या को की र ती भोजान क रा खे र

श्रीसूर्यजोद सोअस्तदुद्धनसेसंपूर्ण
 दीयदाजालपनिअमभावीनयहोइजाद
 ॥ ११२ ॥ ईक्षोयति ॥ ईक्षोयकपीयाहादी
 जोदुष्टजलचरमेरहितभयाकोनिर्मलमो
 क्षकपीरस्तोपावीनभयाकोयेस्तोअमन
 रुधितकाडमारमनगर्माहृपरमभेष्टअ
 मृतपीडद ॥ ११३ ॥ ईक्षुतेति ॥ ईक्षो जो
 वामदेवमपिअनकुरुमुमायाकोसह
 जअमनस्मनसाक्षान्निवनेरस्तोपकार
 लेकहाकोहोस्तोभयासहजभयाकोनिस
 कनधनभयाकोप्रयचरहितमनवचनलेन
 भानिसकुआपेलेमात्रवुशीयाशिक्षुकन
 हाकोहो ॥ ११४ ॥ विज्ञेति ॥ जवचितमनचंच
 लभयोभयातवससारमनुष्येनाईआईनु
 जानुकिरनुपदचितस्थिरभयोभयाभाक्ष
 दुद्धनस्मरगाडदासीनमनमारग्यरवि
 तेनाईस्थिरगर्नु ॥ ११५ ॥ चतुर्विधेति ॥ यो
 मनकस्तोदभनोनातचारविधिभामनका
 अवस्थाधनुभगीजानुकोनभयाविनिश्री
 सुगमगतेशुभोतभुतीनरस्तोवा
 रप्रकारभोअवस्थाजानु ॥ ११६ ॥ विश्रुयति ॥
 विश्रुयभयाकोनामसअवस्थाहोगताग
 तभयाकोराजसअवस्थाहोभुशिलभयाकोने
 कोसाविदीअवस्थाहोभुशिलभयाकोने

११
 नैगुणतेरहितभयाकोअवस्थाहोभनिजा
 नु ॥ ११७ ॥ विभ्रिष्टेति ॥ चारप्रकारका
 अवस्थाभापनिविश्रीशृंगतागतनिजोद
 सोविद्वत्परविषयदुईनेदुईकोग्रहनगदी
 दृग्भुशिलशृंगभुतिनदुईजोदृग्स्तोविद्वत्
 रविषयकोनासगर्माहोभनिजानु ॥ ११८ ॥
 ततेति ॥ तसेधारगाताहाअभ्यासभानुकिने
 यदिनिरालम्बभयोभयातसेसमयमासम
 रथभयाकोदीपोपरमआनन्दहोईजाद ॥ ११९ ॥
 ॥ अभ्यासेति ॥ पहीलेअभ्यासभालभोम
 नजोदसोविभ्रिष्टनामभयाकोनासईदना
 होदेविडिपानकेहिनिश्वलभयाकोगतागतना
 मभयाकोनिचिनुआनन्दहुदेजाद ॥ १२० ॥
 सार्वदेति ॥ आपेनाआनन्दनिश्वलचितभया
 कोजोदसोभुशिलभनिजानुद्वारअतिनि
 श्वलचितभयाकोआनन्दवारवारदुमभुति
 ननामभयाकोहोभनिजानु ॥ १२१ ॥ येस्तातर
 हकाकर्मतेगारिपुण्यपापनिदुईक्षयेहोई
 जादपुमेपापतिलिनहुनसकतेनगुहेहग
 पापतितस्मभोगगर्नपदेनभनिजानु ॥ १२२ ॥
 ॥ ईक्षोयति ॥ अतिवडाभयाकोसहजान
 दतश्वेष्टकभयाकोसदासर्वदाअभ्या
 समास्वभावनेरतभयाकोसर्वसंकल्पने
 कभयाकोतेस्ताविद्वानलेसकनकर्महोइ
 नभनिभद ॥ १२३ ॥ स्थिति ॥ जाना

तर ह्वाविशासास्त्रजायाविहानपीडित
 हाडिदुपरिनुसकलशास्त्रकोरस्वरूपआ
 त्मानत्वतातेजायेननुभुजहिभयाजसैडा
 दुजोदसोअनेकरसमावारवारद्युम्योदयोया
 रसयेसोदुद्धभरिजायेनरसतायागलेमा
 वनाददुभरिजानु ॥ १०४ ॥ **सीसारिहेति ॥**
 सीसारीकर्ममायुभ्रमेकनमब्रह्मशरीरु
 नुभोनेअईधरगर्वाकर्मवह्यदुवेदेवीभ्र
 वभयाकोनेसाईचराडलेहोभरीजानु ॥
 १०५ ॥ **सुधेति ॥** हामितत्वजीडहोभरिअभि
 मानलेगरिठगीयाकाकर्मदोडयाअसक
 रगमातिमास्त्रपास्त्रराडवृतिभयाकाप
 रीडनअभिमानिहकसैगकहीदेनभरिजा
 नु ॥ १०६ ॥ **नक्षमीति ॥** तस्मान्मोगीहक
 लेकर्मदोडनुकर्मदोदिदीपानयोगीताईध
 र्मओफेदाडददकर्मकेनदोडनुभरीनातक
 र्मकोमूनभयाकोसैकल्पविकल्पभोनास
 गनीनिमिनेनकर्मकोअविनासगर्नु ॥ १०७ ॥
यदायेदति ॥ जाहाजाहासथैअभ्यासबढ
 ताताहाताहाननेति सैकल्पतयहुदिजा
 ताजवसैकल्पकोनासभयोभयाजोगीता
 ईकल्यानईधआक्राफकोनानिमित्तततिन
 तिधर्ममागगर्नु ॥ १०८ ॥ **दातामिति ॥**
 हेमुनेयोशास्त्रकुसाताईदिनुभन्याअनि
 दाताभयाभ्रमोक्षभाईधभयाकाबारवा

रभ्रुहलेयुक्तभयाभासिद्वयकनयोशास्त्रदि
 नुअरुताईनादिनु ॥ १०९ ॥ **शस्त्रेति ॥** योशास्त्र
 कस्तोदभनोतातमोक्षकोईकागर्वालेसदास
 र्वदाअभ्यासगर्देगर्नुअभ्यासगर्नुमानआत्मा
 तत्वप्रकाशईधयस्मासैदेहदेन ॥ ११० ॥
गदिवेति ॥ यस्ताअभ्यासगर्वापुरुषनाईदि
 नमाजोगेरहुनरगतमासुनीरहुनुरविभ्या
 दिनभ्याजवसहजमासुतिजानुजोगीताईरस
 नादकोनेममवाहीदेन ॥ १११ ॥ **निर्मलति ॥** नि
 र्मलसहजानरुमारयाकापुरुषताईदिनगर्नी
 र्मयाहुवेभेदरईदेन ॥ **जामोसयनदेविमर्नि**
तभयाकोईधविमृकासमाभावआनरुभेदई
धरभरिजानु ॥ ११२ ॥ ओंकारेति ॥ ओंकार
 नआदिगारिगानतरह्वामतलेविस्वित्तगर्नी
 लेनामुओफेस्थीरईधयोस्थिरभयापदीने
 जईत्यतिईधनेजकारवायुकोअभरतालक
 मतजोदसोभुयअम्बरपदकईधयोकहि
 आयाकोसवेमारईधभनीप्रतीतमानिनाग
 अमदोडीदेहदेवीगुभेजअवाकास्त्रेसवे
 माभयाकोयेसोअमनस्वरूपीअमरपद
 तत्वकनवुद्धिमानजायालेसेवागर्नु ॥ ११३ ॥
॥ अभ्यजनेति ॥ योअभ्यासकसोगरिहो
 ताभनोतातअनेकजन्ममाअभ्यासगर्वाले
 योस्वर्यतत्वप्रकाशईध ॥ इति ॥ ११४ ॥
 ११५ पसातचैत्र गतेपरोजमाभादगाड
 योमादोफदेवभेजीयन्चमृतेसारेको



भगवत्पुत्रः ॥ ॥ कोहिकाली तकासमयमा
 श्रीवसिष्ठमुनिजोद्धरं तिरुकेपरमासामविभ
 ननभैवापकभयाका आकैनेजविरुधभै
 चिन्मार्तचैतन्यप्रकोअनुभवगरि मेकेमरु
 लाचरसाकारितलेपरिशातविरुधभया
 का श्रीपदचन्दकनशिक्षागद्वे अहंसवध
 बैरधाकाजोद्धरि कौगाप्रकारले मुक्तकुलाभं
 नानिभयगरि भयाका पुरुषकल्लुह भनौ
 ला तनीमुख्यमनिहोइनन् मिशानिविद्यारुष
 विहोइनन् तस्मैपुरुषलाहंमन योशास्त्रउप
 देशगर्नाकोयोग्यह अहलाहंमन २ जालन
 लकपरमेश्वरकोअनुग्रहकुदेन तहासकमकु
 हत सगुशास्त्रकेहिमिलदेनन् तस्मात्मेकेम
 न्मुहसरागगारि सगुशास्त्र मुमुक्षुर्करपरमेश्व
 रकोअनुग्रहलेदेववृद्धिभैदेवताहोईजा-हन् ३
 मन्त्रवडोअनुभवकोयुक्तिविनायोसंसारकारजा
 कोमन्दैव जलमयुक्तिलेगरिहेराम हनुकिना
 ५ युक्तिवहकालमकोमलाहागारिमानसमुदका
 एलागिजाहंमनैगुहउपदेशविनासंसारकारजा
 ५ देन ४ योसंसार भंन्याकोवडोठलोदीर्घरे
 महेह मकोओषधीकाहो भनौलात मको
 ५ योसंसारकोहो भयाविचारैमान्योसंसार
 कारजाकोओषधीह अकोओषधीह ५
 कोनादेशमाआमसतवशहैवन् तज्जनपुरुष
 हपीपुरुषकोदायापविहैवन् भया तस्मात्तव

वीवेकन भयाका देसमा. हकरान पनीन
 वस्तु. नत्व भन्याको वरुणा वंदा. वंदात्व नभ
 यासीनल द्यायापनि हुदैन ॥६॥ यज्ञानत्व
 ज्ञासदा सर्वदा सनोय रहन्या मजन मंगमा
 जानुर. ईसा मजन पुहले. ईपदेशा गोनन
 पनी. ईसा मजन पुहले वंदा चर्य कारेन
 ले. वनावाना वारंवार गयको सुदैमा ईपदे
 क्षाक्षि क्षा होई जाई यस्मा सदैह देन ॥७॥ मंग
 भन्या वीद्वान् केगनुर भू. नत्व यनि पूरणत्व
 भाव होई जाई. मन्या दन पनी. प्रजवर होई जाई
 ॥८॥ प्रापति गयको दन पनी. वंदात्व भाई पा
 ईनाले. वंदा संपानी दाजसा धर्य होई जाई
 ॥९॥ ज्ञानको स्वभाव जोई केवल. प्रात्मा
 मात्र लये भे आनंद भयाको ईद्व भनो लगन
 गने. प्रात्मा ज्ञापुह्य काना जीकमा गया संपू
 र्ण दुख निधारण ईद्व ॥१०॥ नत्व ज्ञान रक्षन
 क्षाक्ष मथन भयाको विज्ञान. अरवन्द मयभ
 याको सदा रूपि मुख भे मन क्षाक्ष विरगह
 भयाकन मात्रमा धुहले ईपदेस क्षादि गार्
 दियाका. वंदा ज्ञानले मुखि भे आनंद पाई
 ददन ॥११॥ ईपदेसोनि. ईपदेशा का. कमहले
 कसो ईद्व भनो लगन. हरा म. व्यवस्था हरा
 जमा ध्य ईद्व ज्ञान भन्याको वस्तुन. शिखा

कामु हद सत्व गुण बुद्धीले मात्र दृढ मिलाद्व।
 दृढ तोलीना व्यवस्थाले मिलेन ॥१२॥ नक्षा
 स्त्रा मिमिन क्रास्त्र ले प्रत्यक्ष गरि देखेन क्षाक्ष
 द. नगुहले देखेन क्षाक्ष दन्. प्राप्ते नत्व गुण
 ले मात्र. प्राफु. प्रात्मा स्वहृप प्रत्यक्ष गरि देखी
 द. विना नत्व देखी देन ॥१३॥ सर्व मिमि मपूर्ण
 यावन. प्र. भास गरि. का. कर्म क्षाक्ष हन द्यादि
 निमात्र चिर्मि ज्ञान दन्. यज्ञो ज्ञान कलाको नत्व
 भयाको न. हकवेर जानि मात्र दिन दिन वठ देजा
 द ॥१४॥ प्राफना गलगमा हगयाको गहना जो
 द सो भमले काह गयो भनि वाचा खोज ददन.
 खोज दमा. प्राफले नेरे गहना कसो थियो ने
 रे गलगमा. भनि दिनि मा गहनाको भम हराई जाई
 द. नेसे. प्रात्मा यनि गुह वाकले. प्राप्ते मा मिलद्व
 ॥१५॥ स्व स्वहृप भयाको. प्राफु स्वहृप. प्राफुले न
 जानि देवले वजिर्म गयका जनहृ. व्यर्थ विस
 य भोग कन मुख ठहराई दन् ॥१६॥ पदि मोहि विषये जो
 द सो महका मोहले मोहि काना भयाक्ष. नाक्ष ई
 न्या. भनि खर पाई देन परेन विषये भोग भन्या
 को दुरवेद मुख केई देन ॥१७॥ बुद्धीले जानि क
 न यनि जो मनुष्य विषय पडा र मा. वारंवार विषये
 मा चित जो दि दन्. सो नत्व मनुष्य कन विषयका
 भावनाले बाधियाको जोई. मनुष्यमा को. पम
 गदा हा हे भनि जो नु विषयान्दि को मुनि गयको

हो ॥ १६ ॥ हस्तोर्नि रिके चन ईया मनुष्य मनका
 सैकल्य सैसा का सुख दुरव मा दुवे रह्या को जो
 दन मोने हि मनका सैकल्य मोनि दिया ॥ १७ ॥
 यम-प्राण दुरव पाईया दन मोमना कि जानि जा
 देन ॥ १८ ॥ जसो स्वप्नमा निंदाले गुह्य भै स्वप्ना
 देरया मा भम भै दुईयादि सुखा के पानि चरखि ईन सु
 न्या भै भम पाई दन ले जागन्-प्रवस्था मा पानि
 मारा विलास मा ह-भन गन्या जे दन मो जाग द
 न पानि भम मा पया का हुनोले विष वेर मा फि देन
 ॥ १९ ॥ हलो पुढ्य पानि होमल-प्राण द युक्त वु
 धि जे एर एग द्वेष्ट दोष विमुक्त भयो भन्या मोहि
 साक्षि हप हुन भनी आफु मा-प्राफेले जाँद दनः
 नलो पुढ्य ले जिया के माज मफल द भनी जानु
 ॥ २० ॥ हो सैसा मा यो लि-या हो यो दाना हो पाई
 न्या वलु के वि-चा-गन्या के ज्ञान जेना पुढ्य क
 न निश्चये भया के दन के माज चिन ज्ञान भै च
 न मा चिन हिंसा भया के हुनोले नैले जिया के
 माज जो भाय मान द ॥ २० ॥ यो ह-दया का हा-गहा
 ईद मा देह जे द आफे ना स ईह हस्त अनन्य देह
 को-गहा ईद मा-प्राण को-गहा भयो भनी व्यर्थ हो
 क गद दन-प्राण-प्रावि-गमो हो ॥ २१ ॥ घटा दिवो
 गो-जसो घटा कुन दामा प्रश-भि-नको-प्राका हा मा
 हा का म मा-पस द भै मिला द नको यो देह नर
 ईद मा-प्राण जो द मोन क ई देन भनि रव क को

हो जा देन न ॥ २२ ॥ प्राण जो द मोन ज
 म द न म न द ॥ जनि हि द ॥ नहा ऐर ऐ द ॥
 कदा चिन् किं चिन् के हूपनी म-र्या ज-म
 न्या हो ई न न मोहि हांम जो द मो जग दी च
 न हप ले केवल जगन्-प्राका हा मान भै रह्या
 को द ॥ २३ ॥ हेरम-हस्त-प्राका हा भै द
 पानि फेला ई रह्या का शुद्ध सुक्ष्म-प्रव्य
 य-प्रभि-गहा-शिव-प्राण कन जन्म-या
 म न्या हुन भनि क सो गहि भनु भनु हु देन ॥ २४ ॥
 संपूर्ण मा हके भै-या दिव्य मध्ये भै-यो दे
 रिवन् भिन भया का भावर-प्रभाव भै-या
 भावना देखिन् मुक्त भया का भनि जस्ता ई
 निश्चय ययी को द मोहि माज सुखि दन सुखि
 द भनी निमि जान ॥ २५ ॥ हेरम-वहान मा
 मोवनी ली-चण्डाल का घरे दिखिन् भिक्षा मा
 गो जिईनु मफल द-प्राणान जगनि मुरव भै जी
 र्नु वटिया देन ॥ २६ ॥ हस्त-प्राण मान व्या
 धि को नाप ई दन ना विषय हस्त को नाप ई दन
 व्यर्थ मुरव मनुष्य हस्त-प्राफे हा ऐर का मुरया
 जीले भया के दुरव तंय मान मोह पाई दन
 प्राणान एग घोडिन वीस य दुरव को नाप
 के हूपानि ई देन ॥ २७ ॥ ईली जो वा गहा ह मो

भाषायां वेदाग्य प्रकरणी नाम प्रथमोऽध्यायः
 ॥१॥ योगेश्वरमुनीजोदन सो श्रीरामचन्द्रकन
 कहें दन यममानिनि ॥ जगहासमा योगेश्वरको
 सकल्य विकल्य संज्ञायां भेदुन नैन ॥ जगहा
 सम्यो सो सारमा जन्म मृत्यु को दुन नैन ॥ ज
 सो समुद्रम धन गर्दा मामडा चल पर्वत नग
 ली ज्वाल् क्षीर समुद्र को तरंग चले दे रहें द
 न सो सकल्य विकल्य संज्ञायां समन भे
 द्यानि नुनानु केहे दुन नैन ॥१॥ योगचिंत जा
 हासमा चंचलत्व रहें द नगहासमा निमेषरूपि
 देहपनि चल दे रहें द ॥ इंदुवैचंदे रहो भैयावा
 रंजा जगामन ई दे रहें दः प्राणवासना रूपि प्रा
 णका यामेल निरो धगनु ॥ निमेष रमनस्थि
 र भेजना मारण आपे दुन नह ॥२॥ प्राणै मनका
 सकल्य विकल्य ले यो सारमा एतद्दृगर्ग दे
 सायाको दः यो मनका सकल्य दुन्या प्रोतः यो
 सारकन मनै ले वनाया को हो भाने जान्या
 मनुष्यकन यो सारले वा धगन सकेन ॥३॥
 नपुष्ट नष्टि नपसक रे सागमनेल कल्योत
 गते वनायाको सारमा एतद्दृगर्ग दिन सम रहें द्या
 दिष्ट रोग रहें द भानि विचार गन्धी ने हो विचार
 रूपि आत्म ब्रह्मा भै रहें द भुभ्या विचार गन्धी
 पुष्ट विचारो मा लो होई जो दन हेराम येला

भाषाका सो भाउत मसा हुंदा रहें दन भानि विचार
 रगन्धी पुष्टकन भैयाः प्राण-ना भायाकन-प्रा
 णे मा लो गते येला ज्ञानि लोई परमा नंद मुख
 को भोगकन विलास गगर्ग दन ॥४॥ प्राणै प्रा
 श्रव्यः यलो विचारमाया ले यो विश्वकन भेह
 गते रहें द्या को रहें द ॥ येला भेह ले ॥ प्राणै शर
 मायायक भै रहें द्या का-प्राणाकन को रहें द देन
 न ॥५॥ योग्याचन दृष्ट वस्तु जो द सो साचो ना
 लिये दिना केहि पाने दैन नः जमे गंधर्व पूर भैया
 का जगमाः मृग नृणा को जल साचो ई देन
 नलो दृष्ट जगन साचो होई न भनी केहि जो देन
 ॥६॥ यलो दृष्ट सारमा भैया न देखि न्याः प्रा
 ण अंनकर्ण भैयाः अमोन रम स्वादमा के गलि
 मा भै यक स्वयं भै रहें द्या का यला जगामन देखा
 रहें द भयाका ॥ अविनासिकन मरु आत्म भानि
 प्रख्यान भयाका दन ॥७॥ स्वई ज्ञानरूपि दर्पन
 मा पुनि विस्व पनी ले समस्त वस्तु कन देखि याव
 दन देखि याका दन ना पनी ई सवः वस्तु जमे नला
 ई मा पुनि विस्व पनी ले जलो मानो हो मयन सोई स
 दा-प्राणा मानो ई दन ॥८॥ सपूर्ण चिते का भम
 ले वन्या को जगन जो द स्वज्ञानि हृष्ट हो माली
 न भयाका देख दन ॥ ३॥ ज्ञानि हृष्ट जगन रंज
 त्रि-ने देखि मा जगन साचो मां दन जमे दो
 रमा भम वाट ई पैन भयाको मर्ष रोगि भानि
 निश्चय ई देमा भम देहि मालय होई जा दनः न

ज्ञान्या सा चे ईद ॥ ११ ॥ जसो भोग वासना
 बाध पाका मनुष्याकन दुखो पदार्थमा लग
 ग्याका हुनाले जन्म मर्न बार बार ई दे र्हैदः
 नसो मनका भोग वासना दुखा घोन जन्म मर्णा
 को वासना हुनि जाई ॥ १२ ॥ यो मन को सीक
 ल्य ॥ महान्वादि लो परमात्मा देखिन् दुयन्
 भयाका हुनाले स्थिर भयाका समुद्र देखिन् चै
 चल न र्गई न्पन ईद न् नसो मन परनि ॥ परमात्मा
 देखिन् प्राया को हुनाले दीया भया आये रमा
 त्मा ईद न् ॥ १३ ॥ यदीनि ॥ यस्तो स्वयं र्शे दे
 सिन् निकल्याको मन जो द सो आये मन का सी
 कल्य वि कल्य जेन गर्द द न् सोहि सो हो कृठो
 वस्तु ॥ चतक जन्मो ले देखाई न रा जाई जग
 न प्रवस्था भापनि स्वप्ना प्रवस्था भापनि
 फेलाई एखा को द ॥ १४ ॥ जसो बालो भा
 भुन भे मर्याको हुनाले जोई जाल् सम्म दुरवधि
 दे र्हैद नसो दुख जगन कन माचो थहराई जा
 मुठमनि भयाका जो द न् सो यो जगन मा धारि
 ए दुरव पाई द न् ॥ १५ ॥ जसो अघान ले वना
 याका जगन् कन मुन्दे सि वना याका वाजु के
 राल ईद न् सुनना ये के हो नसो प्राण्य देखि न यो
 जगन वनाको हो भनि जन्मा कन ज्ञानि भई
 न् नसो अग्न्या देखी जगन त्रिं चो र्हैद भन्ना जो
 हो सो अज्ञानि र्हैद ॥ १६ ॥ नसो ज्ञानि पुरुष

कन जग भयो धार भयो ब्रह्म पर्वट रुपादिले
 देखिन्मा भयाकि माया कन प्रकास गार्इ जाई
 सबे परमान्मे हुन् प्रका ले देखनाले सर्व ज्ञिया
 ले देखन दूर सुरवे र्हैद नसो अज्ञानि लाई जगन्
 दुखे द ज्ञानि लाई सुख अगने दे द ॥ १७ ॥ यो योनि
 नसो प्राण्यमा कल्याण भे भयाको जगन जो
 द सो अग्नो मालय होई जाई द न् ॥ १८ ॥ जसो
 मुख्य देखिन् स्थिर भयाका किरण सुर्य देखि
 न् निकल्याको हुनाले मुख्य मालय ईद न् न
 सो यो जगन को हो भनि विचार गर्त प्राण्य
 वाट भयाको जगन् प्राण्यो को थरहै ॥ २० ॥ नो
 तुमा जेनि जसो धागाले वनाको कपडा अने
 क भानी काई द न् नपनि विचार गर्त मा धागे
 र्हैद नसो योगि ब्रह्म साको विचार गर्त मा
 पनि केवली अग्नो रूप र्हैद प्रका र्हैद न् ॥ २१ ॥
 योगि ब्रह्म विहरी जो द न् सो चै नै न्य रूप प्राण्य
 देखि भयाको हो नोहि चै नै न्य प्राण्य लय हुना द
 न् न सय ॥ जगन अग्न्या देखि योनि रिक्त भिन्न
 होई न जगन अग्नो हो भनि जान ॥ २२ ॥ नसो
 जले देखि बु दः न र्ग भिन्न होई न न् नसो यो
 प्राण्य देखि विष्व समान भिन्न न हुनाले विष्व
 पनि प्राण्यो मालय होई जाई द न् ॥ २३ ॥ नसो मा
 ला देखिन् घाट जले देखिन् न र्ग सुवर्ण देखि

न कुडलादिनि निनेवसुदेभिन् ईयादिमात्रो
 निमि-न होईनन् नलोयो-यान्मे देवि विच भया
 को हुनाले योवीश्व-यान्मे स्वरूप भैलयाइ-याइ
 ॥२४॥ आत्मज्ञान नई जाल् सम्म जगन देखिछ
 आत्मज्ञाने ई प्रान्त योजगन आत्मै रूप हुदन् ज
 स्ते डोरे भनी न जान्ना सम्म डोरेमा मर्ष ज्ञान ई
 द डोरे भनि निस्वये भया पाई मर्ष ओनि हुनि
 डोरे स्वरूप देखिछ ॥२५॥ जस्ते हेरुम ईद्रीय
 हले उगात्त नत्व विमर्ष जाल् सम्म आत्मा वि
 सि योजगन देखिछ आत्मज्ञाना ई प्रान्त जगन
 आत्मै मालयाइदन् नस्ते डोरेमा भम हुनाले म
 र्ष को रूप देखिछ डोरे निस्वय भया प्रान्त भम जो
 द से डोरे मालयाइद जाइ ॥२६॥ जस्ते स्वप्ना
 अवस्था भाजागन् हुने द जगन मा स्वप्ना हु
 ठे व हई माचेन रु के आत्मा जगन् अवस्था मा
 मात्र जन्म नु मर्ष वेदेन ॥२७॥ येस्ते जगन सा
 चे भनि द न कुठो भन्नु ईद योये सो इ सो भन्नु जो
 द सो भोनि मात्र हो भनि अनु भव गयो प्रान्त यो
 जगन जो द से केवल आत्मै स्वरूप मात्र हो भनि
 निश्चय गर्नु भनी बसिछ मुनिले ओरुम चन्द्रकन
 कहिदन् ॥२८॥ ईतो भो यो गवासीछ सोर भाखा
 या जगन मिथ्या न्वर्त्तनाम दीनी यो ध्याये ॥२९॥
 फेरी गवासा यो ध्याये गरी जीवन मुक्ति ईचा व
 र्णन नु बसिछ मुनि जो दन ओरुम चन्द्रकन क

ईदा भया न ध्यान्म वो धरु के हो मात्र संपूर्ण
 आसा रूप न ह्या न ए के गरी जगन ईद न नस्ते
 को धरु अपि अग्नी भया का इगनी कन मात्र समा
 धी भो ददन् भनि याको दन चुप लागि र ह्या का
 अड्यानिन समाधि भनि देन ॥३०॥ योचि दाका
 येन न्य वृष संपूर्ण माया के हो भनि भावना मा
 इगन भया का वृष जगदन् सो भम रूपि कवच
 पेदि-वृक्षो कवच रक्षा भै परमा नन्द मुखकन या
 ईदन् ॥३१॥ संपूर्ण देखि पट भयो विमाल का
 लका पुरा चन्द्रमा जहि भै ह्या कायला नी जो
 गिकन पटो श्वार् भनी निने कन मात्र भनी द
 ॥३२॥ रुद्रा वृक्ष ईयनि छ इमा तल भावना भै
 अन्न रग्मा भया का वृष कन मात्र नई ह्या ईदन्
 वार् वार् सन्तुष्ट ईद ॥३३॥ नस्ते अरु न्य पर्वन मा
 ईधालो लगदा जाला का इले मृग पांदि जि
 वाजीनु जो दन से न्यो वन मा रई देन नस्ते वृक्ष
 कन जान्ना का सैमा का पाप पुरा रूपि दोष
 कहि आश्रय न भै भाग द दन हन सकेन न ॥३४॥
 प्रसंग का सैगले गरी जगनि अज्ञानी के कोण ग
 चाईद निम्न कर्मा का गुण ह्या भोग मा वर्ति पा
 कल भया का मन सा धन ह्या ईपन्न भया के
 आफे कोण ईधना कर्म गरी अर्ग ईद ॥३५॥ ज
 व इगनि पुरुषले अज्ञानि का भमले डोरेमा मर्ष
 देखि मा मर्ष होईन देगि हो भनि दिदा स्वेट

हृदय भनि जोग्या धर्मा कं पडा ऐरमा पानि दुन नैन
 नमो यो अगमा देवि संसार भया को हृदय भाने
 जोग्या पदि पानि इस जन्ममाः शमले इपार्जन
 गरीका कर्म भोग भोगी मात्र दुन नदन ॥१०॥
 जमो कनीकमाः नाना रंग को फाई पदार्थाः सो
 हिस्वा हिस्व दुन जां दुन पानि ॥ ज्याम्व फलीकमा
 मीलन जां देन ॥ नमो पुम्व शानि कन पानि क
 र्मादि वारं वारं हृदय हृदय भोग दुन नैन भनोला
 नन्यमा शानि कन पानि कर्मादि भोग काले पडै
 देन ॥११॥ पुन कर्मा मुख भैरव्याका बाहि रं न्या
 संसार व्यवहार गदै हृदय शानि कन संसार का
 कर्मलो वा धागर्ग शानेन निद्राले व्याकुल भ
 यामा विरुद्धा पदि मोनने चेका भयो क संसार का
 मापे दोष शानि मोन हृदय ॥१२॥ अहे नोनि अहे
 नरुप प्रान्ममा पुन्य क्षण गि मन का वासना दुना
 ईरव्या का योगि हृदय कन पूर्व वासना का संसार ले
 कर्म गरीमा दन पानि येला योगि हृदय जगन कन
 स्वप्ना जलो भानि रहनोले कर्म पास फाप पाप ले
 वं धई देन ॥१३॥ प्राजे मरेला पानि कल पांन क
 जोये मरेला पनी येला शानि जो दन स्वह जोये
 वरु हिस्मा रव्या को सुन हिलाले बिगन नमका
 हृदयमा शानि कन योग पाप पुंनले वा धागर्ग मागे
 न ॥१४॥ नेला शानि कान नु काही मा दन पानि अ

धवा चान्दाल का धामा जज नज जाहा नहि दुनम
 ना पानि शानि का प्रभाव हो अहेन भावना माहेन
 भावना को आमा मुक्त भया पदि आमा क्षय भै
 कहि मरेला पानि मुक्त ई देन ॥१५॥ हेरम धृष्टि
 कलो द भनोला नगाई का पारला जलो द मुमे भ
 न्याको न वीच मा को कीच जलो हो आकास क
 लो हो भनोला न मुडा जलो मोन दन नमान प्रीति
 वन कन नृण के गरी नीरामि भैरव नृणार्थ भै
 आनंद पाईला ॥१६॥ पुन कर्मा पानि भूये दवा
 हिर पानि भूये द जमो आकास को घडा भिजवा
 हिर मुन्या ह्या के द फेरि अन कर्मा मा पानि पुर्ण
 द जमो जलमा दुव्या को घडा भिजवा हिर पुर्ण द
 ई देन नमो आमा पानि भिजवा हिर पुर्ण द ह्या को द
 ॥१७॥ ईश्वर ले ईजा वने स्वर्ग दिका मुख दुख भै
 नृण का डिका दोष दोडी ईश्वर ले रहिन भै मन दुख
 भै ह्या काः ह्या येका ज आमा मा मुख पुनि पुन
 ह्या को चालि ह्या देन ॥१८॥ निगोथि भैमानि
 सदेन भया का जोगन मुक्ति शारि धाटना गरी
 कला ई देन भनोला न जलो चिज का काले रव्या
 का दिया जाला जलो देखि दन पानि वल्पा को
 ई देन नमो देह दना पानि मरे देह हो भन्या भूति
 मान ई देन ॥१९॥ प्रह कर्मा पि ममाना संपूर्ण
 लगी मन्त्र का के ध्यान गहु मन्त्रा धाता र धे
 येको वासना निवृत्ति भया को जो द मोनने लगे

मानजोवन मुगह ई भनि जान ॥ १७ ॥ हुऐरहि धु
 वर्गसंग सवे केवल मुगह जहि नन संग को भय जो
 मोद दन सो सयोगा वियोग यनि जो वरे वा मोद
 द फेरि स्त्रिको वम मा पारि सैसा एका रेग भोग मा
 हा भया का कन त्रिने के मानि जोग धि नई द ई सो मा
 जु मित्र मा पारि वरे वा जो मनुष्य रहै न्यसा लई
 यस्तोक परलोक दुवे लो क मा ए आनंद को भो
 ज कन पाई द ॥ १८ ॥ योग दय मा संपूर्ण न्याग
 गारि संपूर्ण दृश्य पदार्थ मा पारि मोन चित भै आ
 का सहे अचल अव्यग भै जो रहै सो मुगह पारेश
 ए परमाने धान कहै ॥ १९ ॥ सो लो स मा धि
 काई पाय निमित्त अनेक कर्म गरी नयनि अंधा वान
 गरी नयनि येला पुरुष का हृदय सो ॥ संपूर्ण या
 मा पारि गंधि ना भया का हुनोले इति प्र मुगह क
 हुं लाई द ॥ २० ॥ अनात्म यस्तो देह कन प्राणा
 भनि स माई बु जो हो सो स मा एको वैधन हो देह प्रा
 न्या होई न देह लाई चै न प गारि या यो आत्मा हो
 भनि निश्चय जानु जो हो सो मोक्ष हो ॥ नदर्थ ॥ नि
 न्य मुगह प्राणा मा वैधर मोक्ष दे देन ओके मुगह
 न ॥ २१ ॥ दृष्टा मिनि यो दृष्ट पदार्थ जो द सो मन
 मा पारि का भमले देखि पाके जो हो सो बलु होई न
 भनि निश्चय जान ले जग चै न न्य तदु धन्य क्ष भ
 या पारि नि निवा ए नय निवृत्ति हो भनि कह्या हो
 ॥ २२ ॥ मोक्ष भैया को न के कुं द मा द न के पुरा

मामिल्द नखानाल मामिल न्या हो संपूर्ण मन का
 आसा क्षय भया पान प्राप्ता क्षय भया को मन जो द
 सो आके मुगह ॥ २३ ॥ अगदि अंतन भया का
 आत्मान वा धि न्या हो न न्यो अगत्ता लाई क मेले
 वा धि एका को द न स्का एन नैसा आत्मा वैधु
 मोक्ष भै नु न्य वृद्धि मा न हो ॥ २४ ॥ अनेन भै
 अनंत पाई न्य चै न न्य धनाने द निर्व कल्प य
 के स्वय भै एका का यस्तो अद्वैत क न वैध का
 हो मोक्ष कस्को क्य मा ह व स वैधर मोक्ष भैया
 को वासना मा न हो अद्वैत मा द्वैत का ह व स
 देन ॥ २५ ॥ यस्तो दिनि न स्मान योग मन जो द जा
 हा स मा वासना मा फिदै रहै न हा स मा योग मन
 वैधने मा द भनि जानु सोहि मन जो द सो वासना
 निवृत्ति भया पान मने मोक्ष मने ए मन मन जो द
 देन हो क्य होई न देन न दुहा ले देन द दे द मोक्ष
 आके हो भनि यो चाले जानि ॥ २६ ॥ इती श्री वा
 सीष् योग मोक्ष भाषा यां जीवन मुगह रव्य प्रक
 ए न न्य म नृति यो ध्याय ॥ ३ ॥ फेरि वासिष् मुनी
 जो द न मोक्ष ए म चंद्र कन कहै द भया यस्तो स्व
 भाव वासना भया को मन का नाना रह का बलु
 मा स कल्प वी कल्प ले गारि सो मो वलु मा धारि न्य
 मन चै न न्य भै स कल्प वी कल्प को ना स भया पारि
 मोक्ष मन जो द सो अगत्ता स्व रूप होई जो द ॥ २७ ॥ यस्तो
 न रह का सर्व न व्यापक भया का देवना ह्म यनि

॥१॥ अग्नि संयुक्तः प्रान्तस्वयं भयाका चैनं च वंरु
 माः अनेक कल्पना सगुहो जोहू स्वेसमुद्रमाला
 हरि फिदी जाहि फीदै रहदुन नापानि समुद्र धिरे
 रह्या ईदुन नमर्थ वंरुपानि तले अचलाहू ॥२॥ आ
 फे अनकरुने देखो ईध्याको संकल्प मपि लाहुरे अं
 तक रने संसागको परंपरा संकल्प दुन्या आफे सां
 म्य ईदुन जेले वायु देखि ईध्याका अग्नि ज्वाला वा
 यु सम्य नई ज्वाला अग्नि को ज्वाला ईदुन वायु सी
 म्य भया अग्नि आफे सम्य ईदुन तले अनकरु मा
 म्य भया संकल्प ईदुनेन ॥३॥ योग मन विषय द्वेदि
 आफु अग्न्यामाः प्रने मुरव नव ईदुन वफे रिमन
 जेहू विषय कने देखेन जेले स्वपनामा आफु
 मरिग को देखे ॥ फेरि वीमुश्यायदि म मारि नहु
 भानि आनन्द पाईदु जेले वीषय दतपानि देन प
 ने को होई पानि जादेन ॥४॥ हे रामः आफे आत्मा
 हो भानि नगानिः आनात्म कनः आत्म रह ईदुन आ
 फेले अबलु भानि न भयाका संसाग कन वलु हो
 भनि रह ईदुनामा तसे कन भयाको हो वलु अव
 लु केन नमय भयो भैयाः सोही राम हो अको देन
 ॥५॥ अको ईहो सोमई योग्यो मेरे होये सो वारे
 गले ठर ईदुन सोही सोही जोहो सोमन हो फेरि
 नेहि भावना मपि मनले ममेरे हो भैया आतीक
 कोचा आफु आफे लेपाया घात सोही मनले आ
 फु नु स्वयं पाईनाले आफुमा आफु विले होई जाहू

॥६॥ योगलेनु योहो नु भैया ये सो संकल्प मपि म
 न कोचा नि जोहू सोहू आफु भनि विवर्जित भयाका
 हुनाले नसे भनले यो संसाग व धन पाईदु ॥७॥
 ॥ योगने संयुक्त जगन को ईध्यानि कर्नाहू अगि
 मने संयुक्त जगन ईध्या को देखे नपानि मरि
 ले कदा चीन वनाया को होई ईन ॥८॥ योग चने
 को कारन मा संयुक्त जगन को ईध्या स्थिती निन
 लेक वनाया कोहू नमान योगने को इरीन ईदा
 जगन पानि इरीन ईदु ॥ नमर्थ ॥ मुग्ध को ईदा
 नाले मने कन जगन गर्नु आफे मुग्ध ईदु ॥९॥
 हे राम वासनले संयुक्त भयाको मन जोहू सो
 आफे व धन मा पद सोही मन वासना दुन्या पद
 आफे मुग्ध ईदु ॥ नमर्थ ॥ वदा वदा विवेकी हू
 जोहू न सोहो से मन कन निवासना गारु ई चोद मु
 गिहू ईदुन ॥१०॥ जेले मेहोले आकासमा चंदमा
 कन धाकू दन फेरि सेना कन रागि कोलो होई जा
 हू तले अंतस कर्ण आत्मा कन पानि आमा मपि
 चिसान्धिनिलेठा वधा कोहू मालेन येन देखिया
 कोहू ॥११॥ हे राम अन्त मुरव भे चिदुप मपि अ
 ग्नि मा यो ई भैया जगन मपि नरार्कन हेमगारि
 दिनु रचिनादि भम जोहू सो अन्त मूर्ध भेलाय होई
 जाहू ॥१२॥ हे नान्त्य सो चिनुमा ज वंरु मपि ज
 गन कन वसे हो भानेले योगलेनु योहो नु भैया
 ईध्या मपि संयुक्त भावना होई दिनु नमर्थः वास
 नात्मा भया घात फेरि कल्पना ईध्या न ईदे ॥१३॥

यसै तहले जो केहि हस्तपादि वस्तुमा पोने भाव
 नागरि यसै भावना जानि जो हस्तको हस्त भन्ना स
 पुर्ण होइ किन न सै कालमा यो चेतन जो हस्त सोचि
 सै सल्लय जाई ॥१४॥ होत भनि कन जागृत अ
 वस्था लाई भनि द. स्वप्न अवस्था क. मुकुट होई
 हल होई. मुकुट अवस्था कन होत कहलाई
 इति नहुन्दा होत केहि जन्म मृत्यु नहुन्दा गरी मर्द
 द भनि जान ॥१५॥ जसो धिमीला जलमा कहूक
 रेनु भन्ना को हाल दिया होत जल कन निर्मल
 होई अफुपनि जलमा होई जाई नसो नत्व ज्ञान
 मा युक्त भयाको मन जो हस्त सोचि विधिले मन
 पनि अगमा लाग्यो को हुनाले अगम मा विलय
 होई जाई ॥१६॥ चिन्ता मिति ॥ चेतन होत यो
 सैमा मा वैध नग होई देहले होई न जसो दृष्ट
 दृष्ट कन वायु नला गज्या हल देन नसो देह क
 नपनि चित्त चंचल त्वन भे चला देन नसमान स
 कि स्थिति को काल चित्त को हो देहको होई न ॥
 १७॥ हस्तोत्ति ॥ जसो हस्त कन होत ले पिडागर्द
 नसो मन देहि भनि जन्म द मन लाई मन ले जान
 नु जो नाले नने लाई जो न रक्ष्य को ह ॥१८॥ यो
 मन कन जानि स्वप्न चेतन मा मुक्क मुक्क होई जा
 द न सो ह्यान ध्यान को वरुण नवक वादि फेलाई
 हिनु लोक मा लज्या किन मा देन न भन्ना मुख
 अज्ञानी लाई लज्या के ह देन भन्ना के ह जान

॥१९॥ यो के योग मन देहि वज्रान्ता मान धर्म अ
 र्थ काम मोक्ष मन को सिद्धि ईद नमान् मन को
 जयाचना ओम्सा धाना गर्नुत व्यर्थ के न मान
 पाई ॥२०॥ अग्नि मन को वामना हस्त को वा
 मना हस्त ईश्वर ग. मुक्ति को काल ईद संपुर्ण
 वातना सहित को ईश्वर जन्म मृत्यु को काल
 नईद न ज्ञे मन को वामना निर्वात गरी मन को
 जये गर्द लक्ष्मि नव्या निनात्रि लोक नने माई
 ॥२१॥ सत्संग ले गरी संपुर्ण वामना न्यागर्द
 वातना न्याग भयापदि अगमा विद्या ले देवेदी
 न शास्त्र माहाच ईद यसै पाये ले गरी. वह्न्याम
 न कन अग्ने जय ईद ॥२२॥ पुर्ण मतमा भयाप
 न संपुर्ण जगजो हस्त मोक्ष मन भय होई जाई
 अग्ने देव दद अग्ने देव देन जसो जुता लाईया
 ले सर्वत्र पाथे योगा दाले ले धार्या जसो मा
 दद नसो जाई ईद अग्ने देव दद अग्ने देव
 देन ॥२३॥ न मल्लो ईन मजी वई भनि सै
 लले दृष्ट भेवा धिया को मन जो हस्त सो अग्ने
 वैध भेवा धिया को संपुर्ण वरुण मान दन
 भन्ना सकल ले दृष्ट भयाको मन जो हस्त माझ
 भे मोक्ष भेहेको ह ॥२४॥ यो चिन्ता मुक्क भे ल
 य भयापान सर्वत्र देन भावना का देके होई जा
 द न हो पाई गुण ले रहिन भयाको दानि न
 सोन भयाको अगमय परलोक होई जाई

॥२५॥ नानामन हर्षिगेनम आदि भयाका
 साधुहभया अहजोगी हभया. ईनहभका नि
 वेदमनह. ससा चरिज भयाका देखिकन. मनु
 स्या हभको साम्य हवैनन् अवसा साम्य हुनेहन्
 ॥२६॥ चित्तमात्र स्वहृष वृत्तामा सचेन भैजन्म
 हुत्वाका पुहृषकन परमानन्द परमसुख भया
 कोजोदह येसोहो भानिकन ईदेनन् भानिजान
 ॥२७॥ ईनिओ वारि सयोग सो भाषायो म
 गेलय प्रकरन चनुहो ध्याय ॥४॥ फेरिल
 सिद्धमुनि कहैहन्. हएम अगन्तामा मकोईयो
 सैसा भन्याको कोहो. भैनु. विचाररूपि अजी
 लेमात्रो चित्तरूपि योज भै फेरिल हृषाको सैसा
 रहपि दुखबृक्षकन हनगारि नाम ईह अकालेईदे
 न ॥१॥ जसो अगन्ताज्ञानको विचारमा दृढगारि
 धुरधुर लाग्याको बुद्धिकन अचला हुनाले ह
 व्हाईन शक्तेन ॥२॥ विचारजदो मोवेदोतसा
 स्या अथ कोज्ञानले मान जलको वासन
 ईदेन नसो ज्ञानो पुहृष लाई पतिजिवईसा भा
 वना ईदेन ॥३॥ येसाईहले वासना न्यागभ
 यापदो चित्तजोद चित्तमा विलय होईजोद फेरि
 यान्ताम लेपनि पानचायु को निरोध भया
 पनिमनको वीलय होईजाह नसमान दुलेका
 ममा जो भयापनि गर्नु ॥४॥ साधुसज्जन
 का संगले वेदो ग सन शास्त्रा माहाच भैजोन्

३-॥५॥ समस्तगवेवहाले गारि जगन्कोवे
 वाहर द्वाडिदिन

दिनमा भइयो भै आत्मा मामन पाविनि ईह न्या
 दिनजसो. दिनमाहिना वस होईन भानि निश्चयसो
 नुनव योगी शारि नाम हुन्वा हेह भानि पाति ईह
 न्योपातिनले यो सैसा हो भैया वासना ईर्कन
 हुनसकनेन ॥५॥ हेएम चैद्र दृष्ट भावना अ
 नुमै ध्यान भैविमुध भयाको पुहृषलो विसयेक
 न. अमृत पानि सुल्काईहन् अमृतको विसपनि
 सुल्काईहन्. नसर्थ. जगन् वंछो हो भैया वंछो होई
 जोह ॥१०॥ सत्य भावना गारि योदेहकन देयो
 भैया देहको देह भई हेह योदेहकन अनिन्य दु
 योदेहो भन्या योदेह जोह सो आकाश जाईभु
 चहोई योलेप ईह ॥११॥ सुखजसो मानिस्व
 प्रावस्था गजोन् देह धारि दिसा दिशा माफि
 देह ईहो ईहो नमो भमको देह हैह काहा पो
 भनहेएम भानि वासिस्व मुनि भैहन् ॥१२॥ मदेहई
 भैया बुद्धिकन नन्यागी जपाल सम सर्व नालई
 न्योदेहचिचर जाईहैमु पनेह. नसर्थ. शारि
 हई भैया भावना देडा सुखईदेन जसो कार्मिक
 हभ कुरको गामु हियाको चारुडाला निजोह
 धारोन् पर्यापनि होईदेन नसो साह्रु मई भैया
 बुद्धि नदोडि यका केहै हुन्वादेम ॥१३॥ वरमा
 मारेक भैह्या कासाधु जोहन् शोत हुनाले
 सैसाको मुख दुख को आत्रिमान रहैदेन नव
 देहको अई भावरह्यो भैया आफै नाम होईगीह

॥१४॥ सर्वज्ञ देखान वो ध भै आर्य स्वद्वन्द्व भैरु
 नुः उगै अहंकर दुर्गा आकाश नहि निर्मल भै
 रईला सदेह देन ॥१५॥ अनकरन सीनल भ
 यो देखी योजगन यानि निनल आनंद होई जा
 द अनकरन मा काम को धादिले युगल रखा
 को भैया अग्नी कोडा भैया योजगन कोला
 प दाह अनय नव दोई ॥१६॥ ईनो श्री योगव
 सिद्ध मोर भाखायां वासनो प्रकरन गम पंध
 मो ध्याय ॥१७॥ ज श्ले वंखा भाव देखिकनः उप
 देसगईनः जोन भग्न का स्थिः चैन भयाका
 दनः रुखा भग्न कन आनंद रूप कनो देन पा म
 नुखा ईनम भग्न भयाका कन सदान म्का ए
 र्दहु वसीस मुनि जो दन ॥१८॥ एम चंद्र विष्ठाक
 ईदा भया अध नि एनः प्रनन प्रकाश स्व भाव
 देखान परः अर्ये को धरुप दुन भानि जानिकन प
 नि अनेक चेखा गयीं शरि कन यो मेरे देह हो
 मे देह ईः जान्यो ले होडिकन आनंद ले रई ॥१९॥
 यानि को चैन कोलास मन वृद्धि विचित्र हृद जो दन
 सो आगे का दुन आना देखी व्यानि गिरा भिन्न देन
 न भैया शानको निश्चय न दुनाले योजगन अङ्गो
 माफि ह्या देह ॥२०॥ आपानि पंडमा जग दृष्ट
 चिन भै रई सपनां दुडा मा भैया योजगन मित्र
 हि सगान गदहु भाव अ भाव ई दुबे को दन नहु
 नाले स्वक लेख ग देखि दुनि रखा ॥२१॥

मकलो दुन होला आकाश दिवसु मा नृणा नहु
 नाले आकाश के स्वप्न भै निम्न हृदु यलो चि जीवी
 मजो दु सो फांन स्व भाव विना रूप को दुनाले चीर
 यु अचल भै रखा देह ॥२२॥ चिनो जे हो सो पंच
 मा हा भुन हो चिनो जे हो सो निग नी भुवन हो ॥२३॥
 को चैन न स्वप्न भै रखा दु भनी ॥ अहिले जा
 चान्द ॥ मं पुर्ण मा चिनो भै एकाम भयाको
 जानि ॥२४॥ सवे देखि परा रखा को दुनाले
 सर्वज्ञ मा व्यापक भै आकाश जलो भयाको
 दयो भै नुनो भै नुनो नो सवे मदि ई मे देखि पर
 अ को द भानि कहन सकि देन ॥२५॥ भै अन
 न चैन न्य उग अर्य समुद्र मा जिव रूपि न रंगो
 द सो के हे ईर्य न ई द के ले सेल द के हे आपे
 बिलय ई द आपे स्व भाव ले ईर्य न ई डा सेल
 दा लये दुडा मा न मेरे न म पंद न विरो द के हे
 ई देन ॥२६॥ मदि रूपि अनन चैन न्य वंखा समुद्र
 मा यो अनेक विष्व रूपि लहरि ईर्य न ई डा प
 नि अख दुदा पानि न हानि मेरे ई द कहि ई देन ॥
 २७॥ मेरे शान न दुनाले योगेश्व प्रकन भ
 याको देखि ई मेरे शान भया पीद म आर्ये अ
 परे अचिदानंद प्रभू परमानंद स्व रूप मा
 प्रन्य आगरे म आनंद भै रखा दु भनी कन जा
 नु ॥२८॥ मं पुर्ण शानि भिन्न अनय्यासी भै
 रखा को दुनाले ॥ निन्य मुग्धा चो दानंद आ

न्यापन्यक चैतन्य रूप लाई मेरे वारं वार
 मस्काए ॥ १० ॥ ईश श्री वसिष्ठ योग मणे
 भाषायो आत्म मन प्रकृतै वक्ष्ये मोक्षदाय ॥
 १॥ केरे वसीख मुनिले ओरुम चंद्र कनक
 ईदा भया ॥ वाहे देवदामा भैया काठ का
 पुनली जहि भिज भैया काम को आदि दोसि
 संपूर्ण पूर्वक व्यवहार जेदे ई. केरे अनेक
 एमा भैया संपूर्ण वासन न्यागिकन काम
 को धलोग आसामा विलास गयो के वाहि
 ए भैया संपूर्ण लोक को आचारन जेदे ई
 हे एधव भनि वसिष्ठ मुनि जोहनु ओरुम चंद्र
 कनक ईदा भया ॥ २ ॥ हे एधव अनेक एमा
 भैया स्वै अनेक एनः वाहि भैया अनेक भै
 ई. केरे हृदये मा को ध वाहि भैया जेदे जहि
 भै ईनु नमै नहले अनेक एन लागी कन
 वाहि लोक मा व्यवहार ॥ ३ ॥ पूर्ण दृष्टि
 गणे अचल भै देह को अईका दोसि विलास
 गणे ईनुः ओफे जोवन मुक्त भै संपूर्ण वास
 नाहुनाई व्यवहार जेदे ई. हे एधव ॥ ४ ॥ स्वै
 विभुष्ट जो स्व रूप मा आये ई भै नु यको निश्चय
 रूपि अग्नी कन प्रज्वले गराये द्विविधा जीवन
 नकन ईवा पदि निमित्त के भै सुखि भै ईला भनि
 जान ॥ ५ ॥ देह मेले हो भैयाः अभिमान पासले

गणेः सर्वत्र जगद् दृढ मेवाट याको दः अईः मई
 भैया को ध भै अभिमान रूप पासकन ॥ ५ ॥ ज्ञान रूपि
 स्वदुले देह गणे परमाह निति मुखि होई रहेला ॥
 ६ ॥ पुनात्म करविलास दोसि कन ॥ जगन्मोनि
 वि भागोदारि कन स्थिति ओकन जगन सुख
 वि अवधार हिन गणे जगन को नाम रूप ले अ
 नेक वी भाग जगन्मो दोसि ॥ मनान गोविधुष्ट स्व
 रूप भै सदान्म मय होई ई ॥ ७ ॥ योग मनु नि को
 लिन योग्य रहे ॥ योग मनु नि के देन भै ले लीन्या
 होई नन भैया संपूर्ण मन को भावना दोसि ॥ ८ ॥
 या पदि म ध्यान जगन्मो ॥ ध्यान गणे न्या आत्मा
 द भैया भावना तन्मय होई जाई ॥ ९ ॥ मी कल्प
 ले मी कल्पे लाई मनुः मन ले मने कल्पे मनु म
 न ले मने कन मनु यत्ना नहले देदन जगन्मो
 त स्व आत्म मान्म मय भै ह्या पदि ॥ १० ॥ कला
 निमित्त हे एधवः धन्य मुरवि लाता हो क्या योगी
 एको आत्मा क्या न जेदे हो ॥ शरीर न भो हो क्या
 होई नः जो नमो एका निमित्त कर्म का वस पाहि
 सुख दुख सदा सर्व दा पाई देई हो ॥ ११ ॥ नमर्थ ॥
 योगी एको आत्मान गणे भै नु ॥ १२ ॥ कला पो
 मार के मने ममा क्या न मई दे भै को ला नः मासु
 कृषि राले वन्या को शरीर कन निमी के न लि दे
 निमित्त ओफे चैतन्य रूप भनि जान या अत्यंत दह

कन अगन्ता हो भैया नई बुद्धि किन गद देन
 ॥१२॥ येन अगने देवना कापनि अर्धा
 पति भे परमात्मा भया कापनि भेई भनि जगनि
 कन धनि: योस गिर को मोह मा कान पद दे ॥ सस
 र ॥ योस गिर कन ॥ योस गिर कन ॥ योस गिर कन ॥
 ॥३॥ अगने अगने अगने अगने अगने ॥१३॥ अगने
 असर्य: वीचि मन्थ जसो योस गिर ॥ या
 पक वंसे माज भे रूपाका ॥ किन विभे दू ॥ भ
 नो लगन ॥ नने वंसे देखि ॥ अविगा रूपा भमजे
 दमे सर्वत्र अगने वार देखि दू ॥ अगने रूपा
 भे भाले रूपाका दू भनि जान ॥१४॥ अनेक
 चित्र विचित्र गिर सेवे कन प्रकास गन्धी: सत्य
 वंसे कन ॥ मनुष्य दू कानि भन विम दू: भ
 नो लगन भम रूपा अविद्या ॥ अगन्ताका अर्धा
 वार वालियो: भे रूपा की दू: यो जगन भु
 लाई रूपा दू भनि जान ॥१५॥ संपूर्ण वंसे
 माज रूपाका दू ॥ भैया भावना रूपा विजाले
 माज मुक्ति दू अनेक रूप देवना बुद्धि क
 नन अविद्या हो भनी जान ॥ तदर्थ ॥ अविद्या
 कन सर्वथा त्याग गर भनी वासि दू मुने कद दू
 ॥१६॥ ईनी श्री वासि दू योग सो भाषायी आत्म
 निरूपनी प्रकरण नाम सप्तमो ध्याय ॥१॥ फेरि
 एमचि कन वसि दू मुनी आदु गद निमि रूपा
 दू कन पृथक पृथक भि नगार भन आन्ता मा ॥

यका गहगारि रूपा अगने वहापे आर्ज
 प्रज्वलीन भे ॥ निमा वीधन काम लो जामनि
 एजाई गिर जलाई स्वय वंसे रूपा के भे रूपा
 ॥१॥ यलो मुने को ईश जलवे गद दू ॥ यलो
 जगनि ले: योस गिर दि लई: आत्मा होई न भ
 नि ठहराई: अगन्ता मा मन फका पाई ॥ नव
 यका सगुण आत्मा त्या अगने स्वय गिर मुग
 होई जा दू ॥२॥ यलो गिर सव दू प येनै य
 ले गिर: दू दू: स्वय दू प जे भ जाई दू: हो दू व
 ईने कन अगन्ता हो भनि जानु ईने कन पद वंसे
 हो भनि जानु ॥ ईने कन जगनि परे मे वर होई
 जो दू ॥३॥ यलो संपूर्ण का आ धार भया
 का ॥ हुनाले ॥ ईने नन्व मा यो जगन संपूर्ण
 नहु पा दू अकुले अगने लाई नी स्वय गिर
 रूपा ॥४॥ हो दू व ॥ जो न ले गिर यो भव स
 सा आ धार मा ईने रूपाका दू ॥ नने देखि
 संपूर्ण जगन: ईनानि स्थिति ईदे रूपा ॥ सस
 र ॥ नने लाई अगन्ता पर वंसे भनि नने दू पक
 न निश्चय जानी रूपा ॥५॥ जगन रूपा भी
 नहो: कया होई न: जगनि जगन जगन पृथक हो कया
 होई न ॥ तदर्थ ॥ यलो नहो: ईन जगन: वंसे
 वंसे वंसे पति दू नहुनाले भि नहो ॥६॥

ब्रह्माविष्णु शिव ईश्वर देवता हूँ लेयनी भो
 अद्वैत चैतन्य को आश्रय लेगारु ॥ सदा सर्व
 दा ॥ मूर्खा स्थिति मंदा ॥ स्वर्ग मर्त्य पाताल
 दिशा ज्वाला भवना गयो ॥ योग्यो कामना
 भया कैद ॥ न सर्थ सिमी धारि चित्त स्वर्ग चैनी
 चमदिई भानि निश्चय गारु ॥ १० ॥ मै देखी योज
 गन संपूर्ण देखि याकोद ॥ परमात्मा अव्यय
 स्वरूप धारि मै ई न सर्थ ॥ आदि देखी याको व
 दि ईया योजगन जोद सो सवै मै ई देखि भया दू
 हो भनि रहनु ॥ ११ ॥ ये कै हुनाले व्यापक वृक्ष चै
 नय स्वरूप सवै को आ धार भया का अरव रह ॥
 अबल ॥ अनेक स्वरूप मै ई ई ॥ वाहवा भावना
 लेयन गारु ई ॥ १२ ॥ नम ई नमो देह अकोद ॥
 संपूर्ण ब्रह्मा माव निरंतर दनु ॥ आनंद सर्वज ॥
 पूर्ण भेद को ॥ ब्रह्म का ईश्वर लेगारु दाइ रा
 खा कोद ॥ न सर्थ ईश्वर ले रहै न भै ब्रह्म मय भा
 वना को स्वराग ॥ १३ ॥ समाई नुर समातीनु
 पुजागनुर पुजातिनु सा धारन सैव धर्म सवै दे
 मा माज हो यो योगी हूँ को साव धान सा धारन
 आत्म तत्व जानु माज सा धारन पुजा कहि ई अ
 को पुजा देन ॥ १४ ॥ ईश्वरी वशील योग सो
 भाषाया आत्म चै नमस्स मो ध्याय ॥ १५ ॥ फार

वसिष्ठ मुनि जो दनु साहम चै दू कहि दनु न
 स्मानन मन देह ईंद्रिय ले युगल रखा को हुना
 ले आपः चै नय जो दू सोम देह ईः यो देह मे
 रहो भैया मम नाहियः मले ले गंधिन भै यो
 जो वजोद ॥ सो सवै कहि न पाई कन भुलि
 रखा को द भानि निमिजान ॥ १६ ॥ संपूर्ण मा
 अगे चिडा कारः चै नय वृक्ष ले अकार
 जाहिये जगन मा पूर्ण भेद को द हृदय
 मा निश्चय मा स्थिर भया पाई अगे आत्मा
 को जो वत्त वृद्धि नम ई ईः जे ले नेल साफे
 या को देयो नि भ्या जाहि सो ही जेव अगे आ
 त्मा स्वरूप होई जाद ॥ १७ ॥ मय सो बोरन राई
 न य सो जान को हो भानि ममता ले दुख कै
 लिया ॥ बोरन जो दनु सो निभुदियो
 निमा प्राप्ति ई दनु ॥ न सर्थ काम को धार ले
 मनुष्यानाः अगे ई श्वर धारि निवत्त जलो
 देखि दनु ॥ १८ ॥ जे ले असत्य संकल्प का भ
 मन ले गारियो दारु भया को हो न ले गारि मजो
 वई भैया मूढात्मा जो दनु सो बाल स ले दारु
 को सवै पायाईः आत्मा को सवै पाई दिन
 ॥ १९ ॥ जे ले गारि बाल स हूँ ले माता कि हाति व
 जाई अगाई दनु न ले आत्मा कनः मुद जन

हकले देहादिमा झारि जाहिमानो अग्नमा देह
 स्के हो भन्ना आधा गरिः मुख हक देहादिव्य
 वहा गरि भुलि ह्याका हन् ॥५॥ जसो चित्र
 कारमा लेखा सर्पकन योचि गकारमा लेखा
 को हो भनि नवह एया दुरव दिन्ना हुँदुनि श्वय
 वहा एया पाई सर्पको भय दुरव हुँदैन नलो जीव
 कोरः श्रुको यके भाव जन्ना पाई संसारको सु
 खदुरवको भय हुँदैन ॥६॥ जसो मालामा भम
 लेईनियाकाः सर्पकन मालो हो भनि हुत्ता पाई
 भमजोह सो अग्रे मालिन होई जाह ॥ नलो आ
 न्नादेहि ईश्वरको भइ भमजोह सो भम हुत्ता
 पाई अग्नमा आगे यके भेलिन होई जाह ॥७॥
 जसो नाला प्रकारका कुण्डलादि गहना हर
 के सुवर्ण देखिदु नलो अनेक ईया छि लेगरी
 येके अग्नमा देखि अनेक भेद भे आगे स्वर्ण
 देखिनु वानि ह्याकोह ॥८॥ जसो सिराई हा
 तगोडा भिन्न भिन्न देखिदु नलो मानो ले
 वन्नाको भाडा भिन्न भिन्न देखि जाहिमान
 हो ॥ मानो देखि भिन्न होईन ॥ नलो अद्वैत अग्नमा
 स्थाव भगमादि अनेक भिन्न भिन्न देखिदु नप
 नि अग्नमा देखि व्यापि रिगु भान होई आने हो
 ॥९॥ जसो मनिमा पानिमा चिईमा रेनामा ईनह

माहाज्ञा देहामा योयके मुख पानि अनेक रूप को
 देखिदु ॥ नलो अनेक नहका बुद्धि काचिम्ब मा
 हाया पनीलो ॥ अग्नमा अनेक रूप जाहि देखिदु नप
 नी ॥ अग्नमा जोह सो अनेक देन स्केह ॥ १० ॥ ज
 सो धर्मो लो धुवाज सो मेयले जीमला अग्नमा
 पानि धर्मिले गरि देखिदु ॥ नलो प्रकानि मायाका
 गुणले गरि निर्मल अग्नमा कन धर्मो लेगरी
 दिदु नपानि अग्नमा निर्मल दे धर्मिले देन ॥ ११ ॥
 नलो अग्नि कामयोगले गरि लेगरी जसो अग्नी
 स्वर्ण होई जाह नलो अग्नमा का संयोग लेगरी
 दियादिह संपूर्ण अग्नमा होई जाह ॥ १२ ॥ जसो नेद
 रियाका हडले चन्द्रमा कन संग ह्याको देखिदु न
 लो अनु भवले ॥ आगे मा आदुस्य भे ह्याको अग्नमा
 पानि अग्नमा मनको संयोग लेगरी ईदिये जसो ज
 डव होई जाह ॥ नलो ईदो यदु पानि अग्नमा का सी
 योग लेगरी ॥ ईदो य पानि आने स्वर्ण होई जाह ॥ १३
 ॥ यो अग्नमा पानि जड ईदो यको संयोग लेगरी आने
 स्वर्ण होई जाह ॥ जसो अग्नमा निद्रा संयोग लेगरी ॥
 पानिका गुण अग्नमा ॥ अग्नमा गुण पानिमा
 भेकन अग्रे मेय होई जाह ॥ १४ ॥ असत्य जड चित्त
 संयोग लेगरी ॥ चैनं पनी घन हो घनो जोह
 नलो समुद्रमा जल गे हो भयो पनी ॥ वडवानल अ

उनीको नेजजसो भयाको ॥ अगनीके स्पलई
 द सोनल स्व भावईदेन ॥ १५ ॥ जलेगए गुई
 देखीगुड निलदेखी नेलाई ॥ काठदेसि अग्ने
 धुगादेखी लोहाईई गाई देखी छिई वडाजाले
 मज्ज सीवदद नले संपुर्ण मगएमा आत्मास्था
 कोइ नयानि आविनासी हुनाले ॥ वदाराजको
 नदवीजले मात्र मिलाई ॥ सहज मोलेदेन ॥ १६ ॥
 जले फुसोका विचमा दिइन भयापानि सव
 आकास देखिई ॥ नले सवपदार्थ धानीमा
 जोइनु ॥ सोसेवे मा चीचा गदामा ॥ विस्व
 पमेव मात्रै ह्याकाइनु भनी अवस्य देखिई
 ॥ १७ ॥ जले बाहिर वाले ह्याको एनका दि
 याको प्रकास जोइ सो भीजवाही दुईहाईमा
 प्रकासई नले योगमनमा प्रकास भैह्याको
 ॥ आत्मापनी ॥ अगेके सोए भीज ॥ प्रकास भै
 ह्याको देखिई ॥ १८ ॥ जले औनामापयाके
 श्रीसूर्यका विस्वजोइनु अर्ना प्रकास देखिई
 नले निर्मल मनसापयाके ॥ आत्मा कोलीस्वप
 नि अज्ञानीको नासगए ॥ संपुर्ण प्रकास भैह
 ह्याको देखिई ॥ १९ ॥ जोन आत्मा विद्येस्थि
 ति भैह्याको विश्वजोइसे ॥ अगेके आत्मा ॥ सदा
 सर्वप्रकास भैह्याको देखिई ॥ जले देहेमा
 सर्वजले देखिई ॥ नले गर्ह नानाएके भेडा

यमायाजोइ ॥ दायोके गर्ह वसिकी देखिई ॥
 २० ॥ आदीन जेम मएण देखिहिन भयाके ॥
 येका सन्याचिइ पानि विक्कवस्वरूप भैह्या
 का संपुर्ण जीवका भैया ॥ इनपानि स्थान ओन
 यामी भैह्या का ॥ आकास जहि निर्वाक
 भै ॥ अगेके आत्मा व्यापक भैह्याको देखिई
 ॥ २१ ॥ आत्मा कलाइनु भनौलान ॥ वीअध्य
 चैनस्वरूप हुनाले ॥ अफनानेजले निर्हार
 ॥ प्रकास भैह्याकाइनु ॥ श्रीवीका स्वपंथा
 नि हुनाले डोहमा मालाई नि धाजहि ॥ इनीया
 काइनु ॥ वीअ प्रकास हुनाले ॥ अगेके सर्व जला
 स्वभाव भैह्याकाइनु ॥ २२ ॥ आत्माको अनुभ
 वकसोइ भनौलान ॥ संपुर्ण व्यापक भैह्याकाइनु
 आत्माकाइनु आत्मा भैया प्रकास नहुनाले
 ॥ योगजान्ना अग्नि को नानो जहि भैह्याकाइ
 नु ॥ २३ ॥ योगिनको जानुन जानु देखि वजीन
 भै परमात्मा भविसमान मात्र भयाकाइनु ॥ २४ ॥
 ॥ योग आत्मा कलाइनु भनौलान चिनमयस्वरूप
 हुनाले स्वच्छ निर्मल हुनाले ज्ञानरूप भयाकाइ
 च्छन आविनास हुनाले दोडनु लीनामाहिन
 भयाको ॥ देसकाल जातिले सँग न भयाका
 इनु ॥ २५ ॥ जले अंतर्गोष्ठ मा वायू व्यापक
 भैह्याकोइ नले संपुर्ण भुन छाहो मापानि

॥ मोनो का माला सन्मा रह्या का जोहिगए
 ॥ यकै भगवान् ॥ अगमा पनी वो मुगह स्वह
 लेगए ॥ अंग यामी स्वरूप भेरह्या को दन
 ॥ २६ ॥ जलैय के चैनन्य को प्रकास लेगए आ
 कासादि संपुर्ण ॥ लेकमा गहनो भेगए ॥
 यकै मुख्य ले प्रकास गए रह्या को दन लै
 र्हादि कोत पर्वण का हृदय मा वास प्रकास ग
 न्या ॥ अगमा आवनास को प्रकास भै अको हो
 इन ॥ २७ ॥ नकोहि व्याधि रह्या का दन नकोहि
 मोक्ष भया का दन ह के प्रह्ला मात्र निरह्या
 का दुना ले नह क नहुई भन्नु केवल प्रहो मात्र
 निरह्या पूर्ण भेरह्या को द ॥ २८ ॥ प्रहो भन्वा
 पानि प्रहो को ॥ यो भुवन पानि प्रहो हो ॥ ज्याव
 त परंपरा भेरह्या को पानि प्रहो हो ॥ प्रहो हस
 पानि प्रहो ह ॥ हात्र मित्र दाजु भाई भन्नु पानि प्र
 हो हो अको हो ॥ २९ ॥ जानु जागिनु पानि प्रह
 ने हो ॥ इहुई को हके अनुभव को मुगह भया को
 मुगह भयो भन्वा मुगह भन्वा को नेहि हो ॥ त्यो चै
 नन्य अगमा यकै प्रहो हो भनि जन्मो भन्वा ॥ स
 र्वसिद्धान्त को संग्रह हो ॥ भनि निश्चय जान ॥
 ३० ॥ जाहा जाहा योचिन देदेई हू जाहा नाहा को
 आके चिन्माय को देह्या को ईह ॥ नसर्था ॥ चीने

देखि चितई न्येन ईदामा यो देह देखि हू चीनेयो
 लेक चिने ई लोक चीनेको संग्रहमा चिने चैनी
 चैनन्य ईह ॥ ३१ ॥ यो देखी या को ज्या को हिजा
 न अंगमे को रूप होए यो अगमा हो यो अगमा हो
 न भन्नु पनी दुहे ठहर्ना ले ज्या को हि लिनु होइनु
 सिद्धान्त माहा निर्मलाई कहि गया को द भनि
 कहि दा भया ॥ ३२ ॥ इनि ओ चारोक्ष योग मो
 अगमानि रूपन प्रकटन नवमो ध्याय ॥ ६ ॥ फेरि
 वाक्षे मुनि ओरुम चैद कन कहि दन नमो ले
 माओशा अगमा चैधनमा पया को देखि हू ॥ नसर्था
 नेहि नृह्या को नासगन्यो भन्वा चैधनमोक्ष देखि
 इमे हए ममोक्ष ईह स्वहिष्ट का लेगए ॥ भव
 संसार को अगमा ॥ नि देखि देखिनु भन्वा ममा ॥
 परम सुख के ई ईदेन ॥ नसर्था ॥ यकांत स्थलमा ग
 यो चिन्ता मोति मधुमेई भन्वा ज्ञान ले मन को लय
 गेरह्या पादि आके परम पद पाई ॥ १२ ॥ फेरि देखनु
 देखिनु भन्वा संवध दुवै मोति रह्या को जो दन ॥ सो
 मोहि परम पद पाई सुख उन्नम कहि आया को जो
 ह मोपाई हू ॥ नसर्था ॥ देखि देखिनु सैव धामि ल्याप
 दि मुगह देखि चि मुगह भया को भनि कहिया को द
 भनि नैयो पानि जान ॥ ३१ ॥ अह सन् अह सन् ई
 हुई का विच माह्या को अगमा पद पाया पादि

सो ध्यान गन्धोः सो समानि हो भन्ना पादिनला
 गुण ॥ ये सो भिन्नावादिः की ध्याना पूर्ण भैरव्या
 को ॥ दो दो लेनुः दो डन पादि किन लगनु भनि आ
 के जनीद ॥ ४ ॥ अडा जे डोनि ॥ अर्ध चैन न्य कावेच
 माहिकन ॥ अर्ध चैन न्य मय भयाका यसा पामा
 न नैकन पामा भित्त ॥ आर्ध भैरव ॥ अर्ध
 नवा ईया भनी हृदयाका स भयाका व्यापक स
 वै ईयाका ॥ अर्ध भयाका भनिक नैकन भै
 दन ॥ अर्ध दन ॥ ५ ॥ देखनु को ईया जम्कन
 ईदः देखी नै नको वै धन कर्हिद ॥ न सध ॥
 देखु वलु मनी या पादि देखीया अर्ध मोनि
 जो दः अर्ध स्व स्व मय गुण होई जो द ॥ ६ ॥
 देखना अर्ध देखि न्या देवनाः को दुवै देखनाः म
 न केरि ध्यान गर्वाः मः ध्यान गरीया ईया देखना
 हो भै न्या मनः केरि ध्यान गर्वाः मः ध्यान गरीया
 ईया ॥ ईया देखना हो मन ॥ ईया नै नै नै नै नै
 नै दः ॥ संपूर्ण कन प्रकास गर्वा ॥ अर्ध
 कन हामि ईया मना जर्द हो ॥ ७ ॥ ईया कीच
 माहिक अस्मी नाली भै न्याः स्व मपलियो का सु
 र्यादि अनेक नेज दूया कन ॥ अर्ध नु नेज
 दिये प्रकास गरीया यसा आत्मा कन ॥ ८ ॥
 मो सदा सर्वदा चिन्ता दिये ईया मना जर्द हो ॥ ९ ॥
 निन्दादि जगन को अन्धमा ॥ ईया कावि

चका भैवा मना दूता को अनु भव ॥ जो जाद
 द नसे वा मना दुगी वरुण नै द को भावनाग
 र्या अर्ध जो दन ॥ मो पामा नै द को भोग पाद
 दन ॥ १० ॥ संपूर्ण संकल्प को गद्गरी ॥ यवै
 मिला जलो स्थि अचल भै हृदय माह्यो भै न्या
 ॥ हेरु नै दन ॥ निमि अर्धः अमन भै कन हेमा
 हावा हो ॥ मदा सर्वदा न न्या भयो भन्ना न न्या
 होई जर्द ला भनि जान ॥ ११ ॥ सदा सर्वदा अ
 नै द भय मचो दानै द भै रव्या का जाहा पामे
 धा हो जसे सवै का माना का भाडामा ॥ सके
 माना रव्या को ईद नसे संपूर्ण प्राणिमा सके
 ईया रव्या को ईद भि दैन ॥ १२ ॥ अर्ध भै पा
 रावा को विला न भयाका जलमा नै गले
 पृथ्वी दो पिराव्या को जाहि अर्ध रव्या रूप को
 विदा को रको नै गपनी यके स्वयं अर्धमा भै
 संपूर्ण प्राणि कन दो पिराव्या को ॥ १३ ॥ अर्ध
 दिखामा पुरा भै कन दिक् कुंज रव्या का दन न
 लो अनन स्व मपले भीच बाहिर पुरा भै सके
 आका रव्या को ईद नसे सके वलु ले जगन सी
 मार पुरा मा चैन न्य रूपले पुरा भया को ई

जैसे समुद्र का नौगले घुबो द्योखे जले सय
भैरवा को द नौगले द्योखा को द ॥ १४ ॥ निरंग
भाने अवधवन का हुनोले कै हें नास नहुन्या ॥ अ
कास जलो भनोले आकास को द अंखा को द्यो
रूप द ॥ यंतु अंखमा चैनने द ॥ आकासमा चै
नैन्य देन आकास अंखा को कहरातिमा द ॥ १
५ ॥ निरंग भाने नंगन भयाका आतिगंभी
र ॥ भैरवा भैय के म धु रसमात्र भैरवा को ॥ आ
नैद अंमन को समुद्र भयाको यके आत्मा स्व
रूप संपूर्णमा जगन जो द ॥ सो दुखे द्योखा को द
॥ १६ ॥ योगी पूर्ण देखि न्या मुनिन्या सब म्यापि
द अंखो को आत्मा रूप हो ॥ निश्चय आत्मा ले पूर्ण
भयाको द ॥ नम र ॥ मधि नई योजगन भिना हो
भन्या अज्ञान हो यके रूप भयाका अंख कन रवाहि
न गरी ॥ दुई किन नुत्पाई हो ननुत्पाई ॥ १७ ॥ यला
वापक असंदस्वरूप भयाका अंखमा ॥ चिदपभै
जोना वलामा लायई द नवयो संपूर्ण मीमा
नरी आके रूप पामे श्वर होई मुगकी ई द ॥ १८ ॥
योगी पूर्ण अंखो हो भन्या भावना प्रत्यक्ष भयो भ
न्या यला इगनी जो द न् मे अंखमा य होई जो द न्
नको अमृतापि न्या पुह छजामान हुनि अमृता
मयेई द नको संपूर्ण भावना अंख भयापादि

जिब बुद्धि रहै देन ॥ १९ ॥ निरिजो द मोनुं भानेपि
अगनी भै ॥ योजगन कन होमग यो भन्या ॥ होम
को फल ॥ निरिजी श्वय ई श्वर पाई ला नहिने अने
क अनेक साक्षा वेद वेदों न ले ॥ अंखमा को द्यो
खाना गानयानि ॥ मनुं रस ई भन्या ॥ प्रत्यक्ष नग
याको देखि ॥ सगने रूप ॥ ईला होमको फल य
कयाने मिलन्या देन ॥ २० ॥ यलो विज्ञान अगमन
न ले गरी ॥ निश्चय योजगन ॥ अंखो मप हो भाने
अभ्यास गयो भन्या सदा सर्वदा अगके मुगकी ई द
अनेक अंखमा चाला शास्त्र पाई पहाई मात्रा ई देन
॥ जलो करक फलालिने ले मात्रा ॥ जलासा ले
ई देन ॥ दुई को संयोग भयायाने सगलो ई द ॥ २१ ॥
अईम स्के वला ई सवैका हृदय भावनि बुद्धि
प्रकाश न्या वायु देवयाने मरिई भनि ॥ सुभ्या
सगनी ज्ञानिजो द न् ॥ स्वमुगकी ई द न् यला अ
भ्यासन भयाजो द न् ॥ सोयसे संसात्मा व द्द भै
रहै द न् ॥ २२ ॥ यो होई न होई न यो पाने होई न भ
नि निवे रगदी ॥ मेखरह्यो जो द ॥ मोहि परमव
द हो भनिकहि या को द ॥ योगिना कलनगरी हुन्या
ई सकनुपाने रहै न द ॥ नम र ॥ हुत्पाई न्या द
निन्या भैहै सकामात्र रहै द भन्या जान्यो भन्या
अगफ मा आके अगवद पाई द ॥ २३ ॥ अगता भ

४- अष्टादशमावलिगुण गति किन पदों नग ॥ २४ ॥
 तैमिराचिन मात्र चेतन्य स्वयं ईशानि
 न्याका सदासर्वदा व्यापक वंशः अदिनि यके
 निर्णय भैरव्याकादन् भानि ॥ आत्मा कन निर्मिनि
 श्वजान ॥ तसर्थ यत्ना अद्वैत आत्मा मा प्रशान
 गन्धर्वा ध्यानगारेया अर्को आत्मा दन् भानि स्मर
 नागर्नुजोदः सो ध्यान कहिंद ॥ यो वोरभई भंया
 ध्यान कन पानि विमर्शः वंशे मय मात्र भैरवजोद
 सो समाधि कहिंद ॥ २५ ॥ यमो वंश का मनेका
 वृत्ति भैरव्या भंयाः तस्मिन् सप्रज्ञान नाम भयाका
 समाधि कहिंद संप्रज्ञान समाधित ध्यान समा
 धि भंया पानि ईशम कहिंद ॥ २६ ॥ कलपांत समा
 प्रलयको वायु सागरना पानि ॥ समुद्र दहलेहो
 पोरना पानि ॥ प्रलय कालका वाह आदि न्यले
 ईशान पानि यत्ना मनको वोगनाम भैरवमला भया
 का शानिकन शानि केहि ईदैन ॥ २७ ॥ यमो जगेन
 चेतन्य वंशमाः ई प्राणिहृः ईशानि पानि ईदन् ॥ त
 मर्थ ॥ यत्ना चेतन्य परमानंद स्वयं भयाका
 स्वकन यमो सात्मा पूर्ण भैरव्याकादन् भानि जा
 नु ॥ २८ ॥ यो मनले जा केहि चरचर पानिहृ
 संपूर्ण जगन कन ॥ चनागरी रव्याको ॥ त
 मर्थ ॥ जवापो मन आके ईशानि भाव भयो भं
 या नयनेहि जगन जोद सोयके अद्वैत वंश होई
 जोद ॥ २९ ॥ यत्ना अचल आनंद मोनक भया

कार्मव भोज चंचल दुरवको दृग्भयाको ज
 गत कथको भादि अंतमा स्थिति रव्याको ॥
 हिर्भया चंचल जगन को स्वभावदः यत्ना अ
 चल आत्माकोः एके आत्मा चेतन्य भयाकाद
 न् ॥ ३० ॥ तमो सर्प ले नदो ड्याका काचुलि
 न मेरोहो भानि मंया जेदे रईह सोहि काचुलि
 द्वाड्या पादि दुलामा दनना पानि मेरोकाचुली
 होः भानि ईदैन नले शानि पानि अईका दुन्या पादि
 कासरी मेरोहो भंया भावना रा अद्वैत ॥ ३१ ॥
 सात्माको दास बुद्धि दुन्याका शानि कन वेदले
 भयाको काममा योगर्नु योगर्नु भंया ॥ वि
 धि निषेध दुनाले यो कर्म नगर्नु हो भानि पाप
 निवेदन न ईशाना कर्म हुन भनी अर्था पानि स
 र्वेनः जलोवाला स हले गर्नु नगर्नु केहि पनी जा
 देनः तमो होई रईह ॥ ३२ ॥ जलो धाममा वनाया
 का पुनलिजोद धामोको अग धा दुनाले पुनलि
 देखाई नलो जंशमा माह्याको योजगन ह स्वचे
 नंय रूप वंशले ॥ चलाई मा मात्र चलय ॥ तसर्थ
 वंश चेतन्य भुंयद सो पुनली मेनी या पादि पानि
 धामा रईह नलो वंशमा माह्याको योजगन नई
 दामा पानि वंश रईह तसर्थ वंश चेतन्य भंय
 देन ॥ ३४ ॥ जलो मुंद निर्मल जलमा नग ईदन्
 पानि ईदैन पानि नले नहले गतिकन वंशमा यो

जागत जेह सोल्य ईदा सु-यह फेरि मुक्ति ईदा
मा न्यो जागत सब देवि ई न्यानि सु-या श्रव को
वेवहा जागत के हो धंरमा देन भनि श्रीवास
सुमनि ले श्रीरामचंद्र कन कंध्याको योगमु
लटिका भाषाको अनु स भानगहि श्री अम्बा
गी योगि ले अम्बना सनसरी मा कह ईदा भया
॥ ३५ ॥ ईती श्री योगवासिष्ठ सगे भाषा यी
इगन नत्व विहपनी एक (नी दस मो ध्याय ॥ १० ॥
यादसी पुस्तक दृष्टा दृष्टा विरवी नीमया ॥ य
दि ५ ई म ५ ई वासम दोष न विदेने सज्जन
॥ ५५ साल कार्नीकु फल बाहि सनीवा याही
न सचेया मोध आहुनुलो ध्यमाफ सुगर्न
कोश धायमहु ॥ ॥ ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीदेवी उवाच ॥



